अध्याय 3
चेतावनी

पौलुस और उसके सहकर्मियों के लिए प्रार्थना करने का निवेदन (3:1,2)

[1]अन्त में, हे भाइयो, हमारे लिये प्रार्थना किया करो कि प्रभु का वचन ऐसा शीघ्र फैले और महिमा पाए, जैसा तुम में हुआ, [2]और हम टेढ़े और दुष्ट मनुष्यों से बचे रहें क्योंकि हर एक में विश्वास नहीं।

आयत 1. उनके लिए प्रार्थना करने के पश्चात (2:16, 17), पौलुस ने चाहा कि थिस्सलुनीके के लोग उसके तथा उसके सहकर्मियों के लिए प्रार्थना करें। शब्द **अन्त में** संकेत करता है कि पौलुस जो कहना चाह रहा था उसके निष्कर्ष की ओर पहुँच रहा था और अब वह अधूरी रह गई बातों को एकत्रित कर रहा था (1 थिस्सलुनीकियों 4:1 से तुलना करें)। (उसके द्वारा **भाइयो** शब्द के प्रयोग के विषय 2:13 की विवेचना देखें।)

उसके अनेक बार यह निवेदन करने के आधार पर (1 थिस्सलुनीकियों 5:25; कुलुस्सियों 4:3; इफिसियों 6:19; रोमियों 15:30), हम राय बना सकते हैं कि पौलुस को निश्चित ही यह लगता था कि मसीहियों की प्रार्थनाएं प्रभावी हैं (याकूब 5:16 से तुलना करें)। उनकी प्रार्थनाओं की विषय-वस्तु **परमेश्वर का वचन शीघ्रता से फैले,** या प्रचार किया जाए तथा अधिक से अधिक लोगों के द्वारा स्वीकार किया जाए होना था (भजन 147:15 से तुलना करें)। न केवल उसकी प्रार्थना थी कि वह "शीघ्रता से फैले," उसने यह भी माँगा कि **उसकी महिमा हो, जैसा कि** थिस्सलुनीकियों **के साथ था**। उन्होंने सुसमाचार को गंभीरता से लेकर तथा परमेश्वर का वचन स्वीकार कर के (1 थिस्सलुनीकियों 1:6; 2:13) उसे महिमा दी थी। केवल जब सुसमाचार पर विश्वास किया जाता है, और उसकी महिमा होती है, तब ही वह "उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य" (रोमियों 1:16) बनता है।

आयत 2. जो दूसरी बात अपने विषय में पौलुस ने थिस्सलुनीकियों से प्रार्थना करने के लिए कही वह थी कि वे परमेश्वर की सामर्थ्य **से टेढ़े और दुष्ट मनुष्यों से बचे रहें**। यूनानी में शब्दार्थ है, "दुष्ट और बुरे मनुष्य।" दूसरे शब्दों

में, संभवतः वह उन सामान्य खतरों की ओर संकेत नहीं कर रहा था जिनका सामना वह यात्रा के समय करता था, संभवतः यहूदियों से (देखें प्रेरितों 18:12–21; 1 थिस्सलुनीकियों 2:14–16)। "दुष्ट" यूनानी शब्द ἄτοπος (*अटोपोस*) से है। इसे KJV "अविवेकी" अनुवाद करता है, परन्तु यह उसके लिए है जो "अनुचित, तथा अति अधर्मी" हैं। उनका विवरण "बुरा," या भ्रष्ट भी है, जो यूनानी शब्द πονηρός (*पोनेरोस*) से है। सी. एफ. हॉग का सुझाव है कि ये "दुष्ट, लड़ाकू ... जो उपद्रवी आचरण में सक्षम व्यक्ति थे," और "ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेरित के मन में एक विशेष श्रेणी के पुरुष थे ... संभवतः यहूदी।"[1]

पौलुस ने इसके पश्चात समझाया क्यों कुछ लोग उसकी शिक्षाओं का विरोध करते थे, इस पुष्टिकरण के द्वारा कि, **हर एक में विश्वास नहीं**। जैसा कि हेनरी एलफोर्ड ने कहा, इस वाक्यांश को ऐसे भी कहा जा सकता है, "क्योंकि (मसीही) विश्वास सभी पुरुषों की संपत्ति नहीं है।"[2] पौलुस ने "विश्वास" मसीही शिक्षाओं की काया के लिए प्रयोग किया (रोमियों 1:5 से तुलना करें)। इसका सन्देश सब लोगों के लिए है (तीतुस 2:11), परन्तु सब लोग इसे स्वीकार नहीं करेंगे (2 तीमुथियुस 3:8, 9)। मनुष्य सुसमाचार के सन्देश को मानने या उसकी उपेक्षा करने के लिए स्वतंत्र है। केवल वे जो ऐसा करने की "इच्छा" रखते हैं (प्रकाशितवाक्य 22:17) "विश्वास" का आलिंगन करेंगे। शेष उसकी अवहेलना और विरोध करेंगे। पौलुस चाहता था कि वह विरोध करने वालों की बुरी युक्तियों से बचा रहे।

प्रभु और थिस्सलुनीकियों में भरोसे का कथन (3:3–5)

[3]परन्तु प्रभु सच्चा है; वह तुम्हें दृढ़ता से स्थिर करेगा और दुष्ट से सुरक्षित रखेगा। [4]हमें प्रभु में तुम्हारे ऊपर भरोसा है कि जो-जो आज्ञा हम तुम्हें देते हैं, उन्हें तुम मानते हो, और मानते भी रहोगे। [5]परमेश्वर के प्रेम और मसीह के धीरज की ओर प्रभु तुम्हारे मन की अगुआई करे।

आयत 3. पौलुस जब दुष्ट और "बुरे मनुष्यों" (आयत 2) और परमेश्वर के लोगों का विरोध करने की उनकी सामर्थ्य के विषय मनन कर रहा था, उसे स्मरण आया कि प्रभु दुष्ट मनुष्यों और उनके अगुवे, शैतान से अधिक सामर्थी है। साथ ही, प्रभु न केवल सामर्थी है; वह **विश्वासयोग्य** भी है। अर्थात, वह ऐसा है जो अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य रहता है। मनुष्य अपनी प्रतिज्ञाओं का पालन चाहे न करें, परन्तु परमेश्वर सदा करता है (1 कुरिन्थियों 1:9; 2 कुरिन्थियों 1:18; 1 थिस्सलुनीकियों 5:24)।

आई. हॉवर्ड मार्शल ने ध्यान किया कि "'विश्वास' और 'विश्वासयोग्य'

शब्दों के मध्य अलंकार के रूप में है।"[3] आयत 2 के अन्त में पौलुस ने इस तथ्य के विषय कहा कि हर एक में "विश्वास" πίστις (*पिस्टीस*) नहीं, और उसने आयत 3 का आरंभ किया "विश्वासयोग्य" πιστός (*पिस्टोस*) से, यह संकेत करते हुए कि परमेश्वर "विश्वासयोग्य" है। सब मनुष्यों में विश्वास नहीं परन्तु परमेश्वर सदा "विश्वासयोग्य" है। पौलुस ने इस प्रकार की बात बहुधा की है (1 थिस्सलुनीकियों 5:24 से तुलना करें)।

इसलिए, क्योंकि वह "विश्वासयोग्य है" वह थिस्सलुनीकियों की सहायता करेगा। क्योंकि आयत 1 और 2 की प्रार्थना पौलुस के लिए थी, हमें यह अपेक्षा हो सकती है कि वह कहेगा कि प्रभु उसकी रक्षा करे, परन्तु इसके स्थान पर, सब बातों से बढ़कर थिस्सलुनीकियों के आत्मिक कल्याण के लिए उसकी चिन्ता के कारण वह परमेश्वर कैसे उनकी सहायता करेगा की ओर मुड़ा। विशेषकर, यह विश्वासयोग्य परमेश्वर उन्हें दृढ़ करे। यहाँ प्रयुक्त यूनानी शब्द है στηρίζω (*स्तेरिज़ो*), जिसका अर्थ है "स्थापित करना, दृढ़ करना, टेक लगाना, सहारा देना।" कुल मिला कर जो विचार है वह यह कि किसी वस्तु को भारी बोझ के नीचे ढह जाने से बचाना, जैसे कि बाढ़ के समय बाँध को रेत के बोरों से सहारा दिया जाता है। यीशु ने प्रतिज्ञा की कि वह अपने शिष्यों के "साथ युग के अन्त तक रहेगा" (मत्ती 28:20), और पौलुस ने कहा कि वह, अर्थात यीशु, विश्वासयोग्य है कि अपनी प्रतिज्ञा को निभाए और उन्हें जयवन्त होने में सहायता देने के लिए सामर्थी करे।

एक और बात जो पौलुस ने कही कि "विश्वासयोग्य" प्रभु करेगा कि वह थिस्सलुनीकियों की सुरक्षा या "पहरेदारी" (RSV) करेगा। पतरस ने 1 पतरस 1:5 में कहा कि "विश्वास के द्वारा," मसीही "परमेश्वर की सामर्थ्य द्वारा सुरक्षित रहते हैं" (NIV), और पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 10:13 में पुष्टि की कि परमेश्वर "हमारी सहन करने की सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में हमें नहीं पड़ने देगा" (NIV)। यह सत्य दिखाता है कि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति की परीक्षा का सामना करने की क्षमता को जानता है और प्रतिदिन हमारे साथ रहता है कि हमारी "रक्षा" करे कि हमारी सामर्थ्य से अधिक कोई परीक्षा हम पर नहीं आए। पौलुस संभवतः कह रहा था कि परमेश्वर कठोर परीक्षाओं से हमारी रक्षा करता है और जो इतनी कठोर नहीं हैं उन्हें झेलने के लिए हमें सामर्थ्य देता है।

क्या या कौन इन परीक्षाओं का स्रोत है? पौलुस ने कहा कि वह दुष्ट है। यूनानी शब्द πονηρός (*पोनेरोस*) का अनुवाद या तो "दुष्टता से" अथवा "दुष्ट से" हो सकता है। यह दूसरा पौलुस के अन्य लेखों के अधिक अनुरूप प्रतीत होता है (2 थिस्सलुनीकियों 2; इफिसियों 6:16)। "दुष्ट" तो शैतान है।

आयत 4. आयत 3 में, पौलुस ने प्रभु की सहायता पर **भरोसा** व्यक्त किया। यहाँ पर, उसने "भरोसा" या निश्चितता की भावना को भी व्यक्त किया, कि थिस्सलुनीके के लोग अपने अन्त समय तक मानते रहेंगे। उनके जीवन का मुख्य

उद्देश्य परमेश्वर और उसके वचन का पालन करना था (इब्रानियों 5:9)। इस मामले में, मनुष्य के लिए परमेश्वर का वचन प्रेरित मनुष्य, अर्थात् पौलुस के द्वारा दिया गया था (1 कुरिन्थियों 14:37 से तुलना)। इसलिये जैसा कहा गया था वैसा करना उनका कर्तव्य था। जैसा कि पौलुस ने कहा, **जो-जो आज्ञा हम तुम्हें देते हैं,** उन्हें तुम मानते हो।

"भरोसा" यूनानी शब्द πεποίθαμεν (*पेपोइथामेन*) से आता है। यह "पेइथो, अर्थात् विश्वास दिलाना, मध्यम पुरुष सूचक शब्द है जो इस काल में अकर्मक क्रिया के रूप में है, जिसका अर्थ है कि हम विश्वास की दशा में पाए जाते हैं।"[4] यही कारण है, कि पौलुस को भरोसा था और विश्वास दिलाया गया था कि थिस्सलुनीकियों की कलीसिया उसकी आज्ञाओं को मानेंगी। उसका विश्वास था कि उन्हें वे मानते थे, [और] जो आज्ञाएं उसने दी थी उन्हें मानते भी रहेंगे और इस बात का उसे पूर्ण विश्वास हो चुका था कि मसीह में उनका मन परिवर्तन की बात बिल्कुल सच्ची थी (1 थिस्सलुनीकियों 1:1)। फिर से, वह उन लोगों की प्रशंसा करने लगा।

पौलुस को प्रभु में उनके ऊपर भरोसा था कि वे सही काम करेंगे, क्योंकि उसने अपने भाइयों को प्रभु का भरोसा रखकर चलते हुए देखा था। जब हम मसीह के निर्देशों को स्वीकार करते हैं और उसमें बपतिस्मा लेते हैं, तो हम दूसरे लोगों को अलग तरह से देखना शुरू करते हैं, जिससे दूसरों पर और अधिक भरोसा होता है कि परमेश्वर उनके द्वारा क्या-क्या कर सकता है।

इसलिये, यह आयत भी उसके थिस्सलुनीकियों के भाइयों को उनके मसीही स्वभाव के साथ उस आज्ञा के साथ जो वह उन्हें देने जा रहा था लगातार काम करने के लिए एक अप्रत्यक्ष सलाह की इच्छा रखती है (आयत 6)। वास्तव में, आयत 6, 10 और 12 में "आज्ञा" के लिए एक ही यूनानी क्रिया παραγγέλλω (*पारान्गेलो*) का प्रयोग किया था।

आयत 5. इस आयत में, पौलुस ने एक संक्षिप्त प्रार्थना की कि परमेश्वर के प्रेम की ओर थिस्सलुनीकियों के मन की **प्रभु अगुवाई करे** या "सीधा मार्ग तैयार" करे। "मन" के लिए यूनानी शब्द, καρδία (*कार्डिया*) सामान्य रूप से आन्तरिक जीवन के विचारों, इच्छाओं और भावनाओं की सम्पूर्णता को दर्शाता है। यह मार्ग **परमेश्वर के प्रेम की ओर** अगुवाई करता है। यहाँ पर "प्रेम" का उल्लेख परमेश्वर का प्रेम हमारे लिए या परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम के लिये कर सकते हैं। इसका अर्थ दोनों रीति से समझा जा सकता है कि यदि हम परमेश्वर के प्रेम में पाए जाते हैं, तो यह परमेश्वर के लिए हमारे प्रेम को प्रकट करता है। यह मार्ग **मसीह के दृढ़ प्रेम** की ओर भी अगुवाई करता है, अर्थात् उस दृढ़ प्रेम की ओर जो मसीह ने विरोध और मृत्यु को सहकर भी अपने जीवन में प्रगट किया।

जॉन स्टॉट, इस आयत में "परमेश्वर के प्रेम" के बारे में बताते हुए, विश्वास

करते थे कि दो सम्बन्ध-कारकों को गुणात्मक के रूप में मानना उत्तम था। उन्होंने कहा कि "पौलुस की प्रार्थना यह है कि प्रभु थिस्सलुनीकियों की अगुवाई परमेश्वर के प्रेम के समान प्रेम और मसीह के समान धीरज या स्थिरता की ओर करने पाए। संदर्भ से पता चलता है कि तब वे अपनी आज्ञाकारिता में अपने प्रेम और धीरज को व्यक्त करेंगे।"[5]

मूलतः, पौलुस प्रार्थना कर रहा था कि वे उस समय तक परमेश्वर के प्रेम पर ध्यान केन्द्रित करें जहाँ उन्हें कठिनाइयों और क्लेशों के बीच विश्वासी के रूप में धीरज धरने के लिए प्रेरित किया जाता था।

व्यवस्था भंग करनेवाले सदस्यों को आचार-व्यवहार सम्बन्धी आज्ञा (3:6–15)

6हे भाइयो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि तुम हर एक ऐसे भाई से अलग रहो जो अनुचित चाल चलता और जो शिक्षा उसने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता। 7क्योंकि तुम आप जानते हो कि किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए, क्योंकि हम तुम्हारे बीच में अनुचित चाल न चले, 8और किसी की रोटी मुफ़्त में न खाई; पर परिश्रम और कष्ट से रात दिन काम धंधा करते थे कि तुम में से किसी पर भार न हो 9यह नहीं कि हमें अधिकार नहीं, पर इसलिये कि अपने आप को तुम्हारे लिये आदर्श ठहराएँ कि तुम हमारी सी चाल चलो। 10क्योंकि जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए। 11हम सुनते हैं कि कुछ लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं, और कुछ काम नहीं करते पर दूसरों के काम में हाथ डाला करते हैं। 12ऐसों को हम प्रभु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें। 13तुम, हे भाइयो, भलाई करने में साहस न छोड़ो। 14यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने तो उस पर दृष्टि रखो, और उसकी संगति न करो, जिससे वह लज्जित हो। 15तौभी उसे बैरी मत समझो, पर भाई जानकर चिताओ।

आयत 6. पौलुस ने कहा, **हम तुम्हें आज्ञा देते हैं,** क्योंकि वह आश्वस्त था, जैसा कि उसने तब कहा था, कि वे आज्ञा पालन करेंगे। इस प्रकार उसने यह "आज्ञा" या आधिकारिक आदेश दिया। पौलुस वह मनुष्य था जिसने आज्ञा दी थी, परन्तु उसने **हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा** जारी की थी, जैसा कि उसके द्वारा अधिकृत किया गया था। और पौलुस ने उसके दूत के रूप में बात की (1 थिस्सलुनीकियों 2:4–6)। इस आज्ञा को मानने से इनकार करना मसीह को इनकार करना था। यह आज्ञा सिर्फ अगुवों को नहीं परन्तु कलीसिया

में सभी भाइयों के लिए भी दी गई थी। प्रत्येक व्यक्ति को पौलुस की आज्ञा का पालन करना था। उसकी आज्ञा कुछ लोगों से अलग रहने के लिये थी। KJV अनुवाद में "अपने आप को अलग रखना" है। सोच यह थी कि संगति या सामाजिक संपर्क से बचकर रहना था।

ये लोग कौन थे जिनसे अलग रहने के लिए कहा गया था? पौलुस का इशारा **हर एक ऐसे भाई से** था **जो अनुचित चाल चलता** है। KJV के अनुसार "हर एक भाई जो अव्यवस्थित ढंग से चलता है।" यूनानी शब्द ἀτάκτως (*एटाकटोस*), जिसका KJV अनुवाद "अव्यवस्थित" और NIV अनुवाद "आलस्य" है, जो "अव्यवस्थित" का सामान्य अर्थ है, परन्तु इस आयत में इसका अर्थ "पराश्रित" या "अवसरवादी" उचित लगता है।[6] जिस प्रकार के शब्द का प्रयोग यहाँ पर किया गया के बारे में, ए.टी. रॉबर्टसन ने कहा कि "पदों से सम्बन्धित यह सैन्य भाषा है।"[7]

थिस्सलुनीकियों की समस्याओं से सम्बन्धित, उस सन्दर्भ के अनुसार विशेष अव्यवस्थित ढंग, आलस्य है। आलस्य में जीना शिक्षा या परम्परा के अनुसार जीने से इनकार करना है। "परम्परा" के स्थान पर, डेविड जे. विलियम्स इसे "शिक्षाएँ" कहते हैं।[8] पौलुस किस "शिक्षा" या परम्परा के विषय में बोल रहा था? यह वह शिक्षा थी जिसे थिस्सलुनीकियों ने पौलुस से प्राप्त किया था, जिसे उसने उन्हें मौखिक रूप से तब कहा था जब उनके साथ होता था और जिसकी पुष्टि उनके नाम अपनी पहली पत्री में की थी (देखें 2:10 पर चर्चा; 1 थिस्सलुनीकियों 4:11, 12; 5:12–14 पर भी देखें)।

यह आलस्य सम्भवतः किसी रीति से, मसीह का आगमन पहले ही हो चुका था जैसी गलत धारणा के कारण (2:2) था। परन्तु, विश्वासयोग्य भाइयों में इसका कोई प्रभाव नहीं पाया जाता था। उन्हें इस भरमाने वाले आचरण को ठीक करने के लिए एक मंडली के रूप में कार्य करना था। इसे सही किया जाना जरूरी था, जैसा कि ऊपर बताया गया है, जो इस तरह से काम करते थे उनसे "अलग होने" या "दूर रहने" के लिये कहा गया है। आयत 14 और 15 में इस "अलग होने" की चर्चा अधिक विस्तार से की जाएगी।

आयत 7. पौलुस ने कहा, पौलुस या अन्य लोगों द्वारा इसका स्मरण कराए बिना, **तुम आप जानते हो कि तुम्हें किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए**। "चाहिए" एक बहुत ही मजबूत शब्द है और इसका अनुवाद "जरूरी है" भी किया जा सकता है। यह "उदाहरण" (चाल चलना) पौलुस का उदाहरण था, और इसका अनुसरण किया जाना था क्योंकि वह मसीह की सी चाल चलता था (1 कुरिन्थियों 11:1)। वह अपने लोगों को नियमित रूप से अपनी सी चाल चलने को कह सकता था (1 थिस्सलुनीकियों 1:6; फिलिप्पियों 4:9)। क्या हम ऐसी चाल चलते हैं कि यह हमारे लिए सम्भव हो?

आज, बहुत से मसीहियों को न केवल एक जीविका की कमाई में, बल्कि

विशेष रूप से आत्मिक गतिविधियों को प्राथमिकता देने में अच्छे "उदाहरणों" की जरूरत है, कि लोग उन्हें देखें और उनकी जैसे चाल चलें। क्या हम, पौलुस के समान हैं, जो व्यस्त होते हैं, बल्कि गम्भीर बातों में व्यस्त होते हैं? या फिर हम अपना सबसे अधिक समय "खेल के कामों में" खर्च करने का प्रयास करते हैं? पौलुस के मन में मुख्य बात थी कि, निःसंदेह, जीविका के लिए काम करना जरूरी है। इस आयत में, उसने कहा कि उसका चाल चलन, आलस्य के विरुद्ध था, और आयत 10 में उसने उन्हें स्मरण कराया कि उसकी शिक्षा भी इसके विरुद्ध थी।

थिस्सलुनीकियों में पौलुस के चाल चलन के बारे में था, कि **वह अनुचित चाल नहीं चला,** ("अव्यवस्थित ढंग से चला"; KJV) बल्कि, उसने कई घंटे काम किया जैसा कोई भी मनुष्य करता है। "अनुचित चाल चलन" यूनानी शब्द ἠτακτήσαμεν (*एटाकटेसामेन*) से आता है, जो "एक पुरानी क्रिया अटाकटेओ का ओरिस्ट कर्तृवाचक सूचक शब्द है, जिसका मूल अर्थ सैनिक आयत से बाहर निकाल देना है।"[9] (इसी शब्द के एक रूप का प्रयोग आयत 6 में किया गया है)। पौलुस के जीवन का चाल चलन उसके भाइयों के समान जिन पर वह सुधार ला रहा था "अनुचित" या "अनियन्त्रित" नहीं था।

आयत 8. और हमने किसी की रोटी मुफ़्त में न खाई; पौलुस ने कहा कि उसने और उसके सहकर्मियों ने काम धंधा किया और अपने तरीके से दाम चुकाया। "रोटी" सामान्य रूप से भोजन का वर्णन करने का एक यहूदी तरीका है (मत्ती 6:11 से तुलना)। लियोन मॉरिस ने आगे रोटी शब्द के उपयोग की व्याख्या की :

> यहाँ "खाना" वास्तव में इब्रानी भाषा की एक अभिव्यक्ति है। इसका अर्थ केवल "भोजन करना" या केवल "भोजन" ही नहीं है बल्कि "जीवन निर्वाह करना" भी है (देखें. उत्पत्ति 8:19, आमोस 7:12, इत्यादि)। पौलुस के कहने का यह अर्थ नहीं है कि उसने कभी किसी पहुनाई का निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया था, बल्कि यह था कि अपनी आजीविका के लिए वह दूसरों पर निर्भर नहीं था।[10]

माँगने के बदले, पौलुस ने कहा कि वह रात दिन काम धंधा करता था (1 थिस्सलुनीकियों 2:9; प्रेरितों 20:34 की तुलना)। सम्भवतः काम का तात्पर्य तम्बू बनाने से है (देखें प्रेरितों 18:3)। तम्बू बनाने और प्रचार करने के लिए पर्याप्त समय देने के लिए उसे लम्बे समय तक या कई घंटे काम करना पड़ता था। उसकी आत्मनिर्भरता में **परिश्रम और कष्ट** पाया जाता था, ताकि पौलुस और उसके सहकर्मी उनमें से किसी पर **भार न हो।** शब्द "परिश्रम" का अनुवाद κόπος (*कोपोस*) से किया गया है, परिश्रम उस बात को व्यक्त करता है जो थकान को लाता है। पौलुस ने उनसे अपेक्षा नहीं की कि उनके स्वयं के

अतिरिक्त वे उसकी सहायता करें।

आयत 9. पौलुस स्वयं की सहायता करता है, परन्तु **इसलिए नहीं** कि [उसे] आर्थिक सहायता लेने का **अधिकार नहीं** था ताकि वह पूरे समय प्रचार कर सके। होग कहते हैं कि "यहाँ पर शब्द ἐξουσία (*एक्सूसिया*) का अनुवाद 'अधिकार' किया गया है, पहला, कुछ भी करने की स्वतंत्रता का, और उसके बाद, उसे करने का अवसर का है।"[11] पौलुस यह स्पष्ट करना चाहता था कि उसके पास यह "अधिकार" था कि अपना पूरा समय आत्मिक गतिविधियों के लिए दे और कलीसिया से अपने लिए आर्थिक सहायता की माँग करे। अन्य अवसरों पर उसने ऐसा किया (2 कुरिन्थियों 11:8; फिलिप्पियों 4:16), और उसने अन्य जगहों पर इस अधिकार का दृढ़ता से बचाव किया (1 कुरिन्थियों 9:1–14)। परन्तु पौलुस को कभी-कभी लगता था कि सुसमाचार को बाधित करने के बदले इस "अधिकार" का प्रयोग करना छोड़ देना अच्छा (1 कुरिन्थियों 9:12–15 से तुलना) होगा। उसने इसे कुरिन्थुस और थिस्सलुनीकियों में छोड़ दिया था।

पौलुस ने अपने "अधिकार" का आह्वान करने के लिए नहीं चुना, पर इसलिये कि अपने आप को उनके लिये **आदर्श ठहराए ... चाल चलो।** व्यावहारिक दृष्टिकोण से, शब्द "आदर्श" ("उदाहरण"; RSV) का अर्थ है एक ऐसा व्यक्ति जिसकी ओर दूसरे लोग देख सकें और जिसने मसीह के सिद्धांतों को अपने जीवन में लागू किया हो। अवश्य ही, वह यह नहीं कह रहा था कि वह एक सिद्ध आदर्श था, इसलिए लोगों से यह निवेदन करता था कि दूसरे लोग उसी के जैसे चाल चले जैसा वह **मसीह की सी चाल चलता** (1 कुरिन्थियों 11:1) है। पौलुस ने "मसीह का आदर्श" बनने का प्रयास किया, और यह उनकी आशा थी कि वे अर्थात् थिस्सलुनीकियों की कलीसिया उसका "पालन करे" या उसके समान चाल चले। जिस प्रकार से वह "रात और दिन" काम करता था, उसे देखकर स्वयं वैसे ही और उसी तरीके को अपनाने का प्रयास करते थे। जब वह थिस्सलुनीके में था, तब उन्होंने उसे कभी खाली बैठे हुए या आराम करते हुए नहीं देखा, जबकि उस समय दूसरे लोग काम नहीं कर रहे होते थे। वह एक अच्छा आदर्श कहलाने के लिए वह "सोच से बहुत आगे" निकल गया। वास्तव में, परिपक्व मसीही कभी भी आलसी नहीं होगा, और बैठकर दूसरों से अपेक्षा नहीं करेगा कि उसके लिए कोई उसका काम करके दे। बल्कि, यदि आवश्यक हो तो अपने स्वयं के आर्थिक जरूरतों के लिए वह रात को काम करेगा, और वह दूसरों के भौतिक (इफिसियों 4:28) और साथ ही आत्मिक जरूरतों (गलातियों 6:1) के लिये सहायता करेगा।

आयत 10. पौलुस ने भाइयों को स्मरण कराया, **क्योंकि जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे** ... । पौलुस पहले से ही घूमने-फिरने के विषय में बता चुका था जब वह मण्डली की स्थापना करने हेतु कई महीनों

पहले उनके साथ रहता था। क्रिया का रूप "आज्ञा ... देते" παρηγγέλλομεν (*पारेन्गेल्लोमेन*, παραγγέλλω *पारान्गेलो*, "आज्ञा देना") का अपूर्ण भूतकाल है, जो बार-बार आज्ञा देने के बारे में बतलाता है, और बड़ी गंभीर समस्या का उल्लेख करता है जबकि पौलुस तब उनके साथ था। इस विवरण ने सम्भवत : कुछ आलसी लोगों की ओर संकेत किया जिनके लिए उस समय आलस्य प्रभु के आगमन के विचार का एक बहाना था। (देखें उसका निर्देश 1 थिस्सलुनीकियों 4:11 में)।

"आदेश" ("आज्ञा"; RSV) पौलुस ने आलसी मनुष्य के प्रभाव के बारे में कहा **कि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए**। उस मनुष्य को दूसरों के द्वारा भोजन नहीं दिया जाना चाहिए, बल्कि उसे भूखा रहने देना चाहिए। सम्भव है कि यह उस समाज में सामान्य रूप से एक स्वीकृत नियम रहा हो, परन्तु यह पवित्रशास्त्र पर आधारित था (उत्पत्ति 3:19 से तुलना)। होग ने कहा, "गुरुओं के पास इसी प्रकार की एक कहावत होती थी, यदि उनके साथ इसकी पहचान नहीं होती, तो हो सकता है यह उत्पत्ति 3:19 से लिया गया था। प्रेरित ने अनुचित रीति के दान से मना किया, जो आलस्य को प्रोत्साहित करता है और जो इसे लेते हैं, उनका अपमान करता है।"[12]

यह नियम निश्चित रूप से उन लोगों के लिए नहीं था, जो काम करने को तैयार तो थे पर करते नहीं थे, क्योंकि वे या तो वे बीमार थे या काम उपलब्ध नहीं था अर्थात् काम की कमी थी (इफिसियों 4:28, गलातियों 6:10 से तुलना)। परन्तु, बात जब आलस्य का था, पौलुस ने संकेत दिया कि यह एक गंभीर मामला था जिसका निपटारा करना था।

पौलुस और उनके सहकर्मियों ने जब वे थिस्सलुनीके में थे बार-बार ऐसे सदस्यों को काम करने की आज्ञा दी थी। बाद में, पौलुस ने इसी बात को लिखा था (1 थिस्सलुनीकियों 4:11)। अब, पौलुस यह आग्रह कर रहा था कि समस्या को निपटाया जाए और जो लोग इस आज्ञा का पालन करना जारी नहीं रखते, वे उनकी संगति से बाहर कर दिया जाए (आयत 14)। परन्तु, उन्हें जाने के लिए कहने से पहले, अगली आयत में उसने आलस्य के कुछ नकारात्मक परिणामों की चर्चा की।

आयत 11. पौलुस ने स्पष्ट रूप से कहा कि क्यों वह उन्हें उनकी स्वयं की सहायता के लिए काम करने को प्रेरित कर रहा था : उसने सुना था **कि कुछ लोग** [थिस्सलुनीके के लोग] **बीच में अनुचित चाल चलते हैं**। उसने यह नहीं बताया कि उसको सूचना देनेवाला कौन था, हो सकता है कि यह समाचार तीमुथियुस की ओर से था जब वह पहली पत्री देकर वापस आया, या सम्भवतः थिस्सलुनीकियों में से कोई एक, जो कुरिन्थुस की यात्रा पर था। किसी भी माध्यम से हो, पर उसने सुना था कि समस्या लगातार बनी हुई थी। उनमें से कुछ अभी भी – इन सभी चेतावनियों के बाद भी – "आलस्य" या "अनुचित

चाल चलते थे" (NIV)। फिर, शब्दों से खेल करते हुए (यूनानी में) उसने कुछ इस प्रकार से कहा, "वे व्यस्त नहीं थे; पर व्यस्त दिखते थे।" दूसरे शब्दों में, वे अपने स्वयं के कामों में व्यस्त नहीं रहते थे, परन्तु हमेशा दूसरों के कामों में "हस्तक्षेप" करते हुए व्यस्त होते थे, मूल यूनानी में शब्दों में खेलना का "कोई काम नहीं करना" μηδὲν ἐργαζομένους (*मेडेन एर्गाज़ोमेनोउस*) होता है, परन्तु *περιεργαζομένους* (*पेरिएरगाज़ोमेनोउस*) का अर्थ "व्यस्त लोग" होता है। ऐसा स्वभाव स्पष्ट रूप से मण्डली में समस्या उत्पन्न करेगा क्योंकि आलस्य के कई बुरे परिणाम होते हैं। पौलुस ने आलसी लोगों को आलस्य त्यागने की आज्ञा दी और उसने बाकी कलीसिया को आज्ञा दिया कि यदि वे अब भी कोई काम करने से इनकार करे तो उन्हें अनुशासित करें।

आयत 12. पौलुस ने उन लोगों पर ध्यान दिया जो एक अनियन्त्रित चाल चलन के लिए दोषी थे। जैसे ही उसने समस्या को सामने रखा, उसने "अधिकार के साथ निवेदन" का प्रयोग किया : हम **आज्ञा देते** [देखें चर्चा आयत 6, 10 पर] **और समझाते हैं।**[13] उनके सहयोगी इसमें सम्मिलित थे, परन्तु प्रेरित होने के कारण आज्ञा उसी की ओर से थी (2 कुरिन्थियों 10:8)। मार्शल ने कहा, "हम आज्ञा देते हैं (आयत 4, 6) एक क्रिया है, जो अपने आप में अनिवार्य होने के बदले प्रलोभन हो सकती है, और यहाँ पर इसे 'और समझाते हैं' ... से जोड़ा गया है जो एक प्रभावकारी टिप्पणी का परिचय देती है।"[14]

ऐसा प्रतीत होता है कि यद्यपि आवश्यक हो तो पौलुस इन लोगों को निष्कासित करना चाहता था, पर उसकी वास्तविक इच्छा उन्हें पुनः स्थापित करने की थी। उसने **प्रभु यीशु में** या मसीह की शिक्षाओं के संदर्भ में यह आज्ञा दी और आग्रह किया (आयत 4 पर चर्चा देखें) और उसके अधिकार से किया। मुख्य बात जो पौलुस उनसे आग्रह कर रहा था यह है **कि चुपचाप काम करें** या "चुपचाप से अपना काम करते रहें" (RSV)। उनका "मन अचानक अस्थिर" (2:2) नहीं होना चाहिए, परन्तु शान्त रहो और मन की शान्ति के साथ काम करो (1 थिस्सलुनीकियों 4:11 से तुलना), और दूसरों को उनकी रोटी अपने लिए प्रदान करने की अपेक्षा करने के बदले **अपनी ही रोटी खाया करें।**

आयत 13. जबकि पिछली आयत में आलसी जो एक अल्पसंख्यक थे को निर्देशित किया गया था, यह आयत आज्ञाकारी बहुसंख्यक के वर्णन के साथ प्रस्तुत की गई है। एक बार फिर, पौलुस ने उन्हें भाइयों के रूप में संबोधित किया। अब वह यह कह रहा था कि अनाज्ञाकारिता के अल्पसंख्यक ने जो भी किया, उस पर आज्ञाकारी भाइयों को निराश नहीं होना चाहिए और हार नहीं मानना चाहिए। उनका कर्तव्य स्पष्ट था कि : **भले काम करने में हियाव न छोड़े** (गलातियों 6:9 से तुलना)। ἐγκακέω (*एगकाकेओ*) से "भले काम करने में हियाव न छोड़े" का अनुवाद किया गया है। पौलुस ने उन्हें "दृढ़ता से विफलता के खतरे को ध्यान में रखते हुए" प्रोत्साहित किया।[15]

परिपक्व मसीही कलीसियाई समस्याओं, पारिवारिक कठिनाइयों, या किसी भी अन्य संकट से निराश नहीं होंगे क्योंकि यह "सही" है कि जो हमारे लिए मारा गया उसके प्रति हम विश्वासयोग्य बने रहें। अधिक विशेष रूप से, हमें अपने धर्म के कामों में या सही काम करने में निराश नहीं होना चाहिए, इसलिए कि कुछ लोग धर्म के काम करने का लाभ उठाते हैं, और थिस्सलुनीके के कुछ लोगों ने ऐसा ही किया था। भाषा की प्रकृति इंगित करती है कि वे अभी भी भले काम करने में हियाव नहीं छोड़े परन्तु पौलुस को डर था कि वे भविष्य में ऐसा कर सकते हैं। इसलिए, उसका उपदेश अधिक क्रियाशील था क्योंकि यह प्रति क्रियाशील था।

आयत 14. अभी भी वह आज्ञाकारी बहुसंख्यक से बातें कर रहा था, उसने उन्हें आज्ञा का उल्लंघन करने वाले अल्पसंख्यकों के प्रति उनके कार्यों को चिताया, विशेष रूप से **कोई** [जो] **इस पत्री की** [उसकी] बात को न माने। उसने उन आलसी लोगों के बारे में बात की, जिन्हें स्पष्ट रूप से प्रेरिताई आदेश दिया गया था, परन्तु उन्होंने ऐसा करने से इनकार किया। यह इनकार सम्भवतः उस समय दिया गया, जब पत्री प्राप्त होते ही उसे मण्डली के सामने पढ़ा गया। जैसा कि पहले देखा गया था, कि पौलुस वहाँ रहकर उन्हें इस बारे में सिखाया था (आयत 10)। उसने इसके बारे में अपनी पहली पत्री (1 थिस्सलुनीकियों 4:11, 12; 5:14) में लिखा था, और अब उसने इसे फिर से स्पष्ट रूप से लिखा है (आयत 6–12)।

इसलिए, यदि अल्पसंख्यक ने इस समय इसका पालन नहीं किया, तो मण्डली को इस मामले पर कार्यवाही करनी थी और ऐसे मनुष्य पर **विशेष दृष्टि रखी जाती।** अभिव्यक्ति "विशेष दृष्टि रखना" यूनानी क्रिया σημειόω (*शेमेइओ*), का अनुवाद है, जिसका अर्थ है "चिह्नित करना" या "उस मनुष्य पर टैग डालना।"[16] "दृष्टि रखने" से किसी का अर्थ केवल "उसकी ओर देखते रहने से" नहीं था, बल्कि इसका अर्थ "दोषी होने पर चिह्नित करने" से था।[17] वास्तव में, पौलुस ने उन्हें आज्ञा दी थी कि वे उसकी संगति न करें, या "उसके साथ कोई मेलजोल न रखें" (KJV)।

1 कुरिन्थियों 5 में एक ऐसे मामले में चर्चा की गई, पौलुस ने विशेष रूप से कहा था कि "संगति मत करना"; वरन् ऐसे लोगों के साथ खाना भी न खाना (1 कुरिन्थियों 5:11)। उन्हें उन लोगों से "अलग होना" था (2 थिस्सलुनीकियों 3:6; KJV)। यह सामाजिक संपर्क तोड़ लेना था ताकि व्यक्ति को उसके आचरण की अस्वीकृति के बारे में पता हो और यह समझे कि कलीसिया ने उन लोगों को अपना "सुनाम" सदस्य नहीं मानती जिनका चाल चलन इस प्रकार का होता है। सामाजिक रीति से विच्छेद का उद्देश्य था कि वह लज्जित हो। कभी-कभी हम पर बहुत अधिक दबाव डाला जा सकता है, परन्तु वहाँ पर "हितकारी सहकर्मी दबाव" जैसी बात होती है। पौलुस ने यहाँ पर केवल इसी

बात की सलाह दी थी। उसकी आशा थी कि वह व्यक्ति मसीहियों के साथ अपनी संगति की कमी का इतना अनुभव करेगा कि इसके न होने से वह अपने कार्यों का पुनः मूल्यांकन करेगा और अपने प्रभु के पास लौट आएगा (देखें 1 कुरिन्थियों 5:5)। यद्यपि, भले ही व्यक्ति ने पश्चाताप करने और वापस आने का चयन न किया हो, पर वहाँ मण्डली की शुद्धता के रखरखाव का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य था (तुलना 1 कुरिन्थियों 5:6)।

आयत 15. अनुशासित लोगों के बारे में, पौलुस ने कहा कि वे उसे बैरी नहीं समझते थे, वे सब कुछ नहीं करते थे जो उसे हानि पहुँचा सकते थे, जैसा कि संसार एक "शत्रु" के साथ करता है। पर भाई जानकर उसे चिताना चाहिए। मार्शल ने कहा कि "बैरी" ἐχθρός (*एकथ्रोस*) से आता है, "जिसके दो अर्थ निकलते हैं, अर्थात् इसका अर्थ हो सकता है कि कोई व्यक्ति मुझसे शत्रुतापूर्ण ढंग से व्यवहार करता है और/या एक व्यक्ति जिससे मैं शत्रुतापूर्ण ढंग से व्यवहार करता हूँ। यहाँ पर दूसरे अर्थ के उद्देश्य की सम्भावना अधिक जताई गई है।"[18]

वह अभी भी एक "भाई" था क्योंकि उसने मसीह में बपतिस्मा लिया था (रोमियों 6:1–4), परन्तु वह एक अनरीति से चलने वाला भाई था जो अपने उद्धारकर्ता की आज्ञाओं का जो प्रेरितों के द्वारा दी गई थी (आयत 6, 14; 1 कुरिन्थियों 14:37), पालन करने में पीछे रह गया था। उसके पास अब सदा काल के उद्धार का आश्वासन नहीं था (इब्रानियों 5:8, 9)। यही कारण था कि जो लोग आज्ञाकारिता में जीने का प्रयास कर रहे थे "उसे भाई जानकर चिताते थे।" परमेश्वर "ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता," वह आज्ञा न मानने वालों को नहीं बचाएगा (गलतियों 6:7, 8)।

व्यावहारिक दृष्टिकोण से इस मामले को देखते हुए, यह देख पाना आसान है कि बहुसंख्यक क्यों आलसी अल्पसंख्यकों के प्रति शत्रुता की भावना का अनुभव करते थे। इस तरह के व्यवहार से कलीसिया ने बाहरी लोगों के प्रति अपने सम्मान को खो दिया होगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:11, 12 से तुलना)। पौलुस ने बहुसंख्यकों को चेतावनी दी थी कि उनके साथ वैसा व्यवहार न करें, जैसे संसार आलोचना और घृणा के साथ अपने "बैरी" से व्यवहार करता है। उन्हें इस समस्या का सामना करना था, जैसा कि पौलुस ने कहीं (गलातियों 6:1) पर कहा था कि "नम्रता के साथ" ऐसे को "संभालने" का प्रयत्न करो।

परन्तु, यदि भाई ने पश्चाताप नहीं किया, तो यह स्पष्ट है कि पौलुस चाहता था कि "अव्यवस्थित लोगों का व्यवहार ... विश्वासयोग्य मसीहियों द्वारा किसी भी अनिश्चित शर्तों में निंदा नहीं किया जाए।"[19] पौलुस नहीं चाहता था कि लोग यह मानें कि ऐसा व्यवहार मसीहियों को स्वीकार्य है। यह क्रिया उसी प्रकार का अनुशासन है जिसकी चर्चा और कहीं की गई थी। इसका उद्देश्य दोषी को बचाना और कलीसिया को पवित्र रखना (1 कुरिन्थियों 5:5, 6) है। इसमें

इसका प्रभाव होने के लिये कि ऐसा व्यवहार मसीहियों को स्वीकार्य नहीं है (1 कुरिन्थियों 5:4) सार्वजनिक घोषणा शामिल है। एक प्रेम रहित निर्णय है जिससे दूर रहने की आज्ञा मसीहियों को दी गई है (मत्ती 7:1), परन्तु यह एक न्याय है जिसे मसीहियों को प्रेम के साथ और उचित रूप से लागू करना है (यूहन्ना 7:24; 1 कुरिन्थियों 5:12)।

यह मसीही अनुशासन, यद्यपि दृढ़ और सीधा है, पर रोमन कैथोलिक "बहिष्कार" का पर्याय नहीं है, जो न केवल निंदा करता है, बल्कि प्रभावशाली व्यक्ति को बैरी के रूप में भी मानता है। यह निश्चित रूप से एक मसीही सिद्धान्त नहीं है, क्योंकि मसीही अपने बैरी को खाना खिलाता है (रोमियों 12:20)। अनुशासन का इस प्रकार का दुरुपयोग किसी का भी न्याय नहीं करता जो इसका सही उपयोग करने से बचना चाहता है। इसके उचित प्रयोग में कठोरता शामिल है क्योंकि इसे "चेतावनी" या "सावधान" शब्द में देखा गया है (NIV), परन्तु इसमें चिन्ता करने की व्यक्तिगत भावनाओं को भी शामिल किया गया है, जिसका उपयोग "भाई" शब्द के द्वारा किया जाता है।

यह अनुच्छेद यह भी दर्शाता है कि अपराधी के साथ सामाजिक सम्पर्क से बचने के लिए कम से कम एक छूट थी। विश्वासयोग्य मनुष्य उसके साथ तब तक सम्पर्क में हो सकता है जब तक उसका उद्देश्य होता है "एक भाई के रूप में उसे चिताकर" कहना कि उसे पश्चाताप करना है और सिधाई से चलना है।

उपसंहार (3:16–18)

16अब प्रभु जो शान्ति का सोता है आप ही तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दे। प्रभु तुम सब के साथ रहे। 17मैं, पौलुस, अपने हाथ से नमस्कार लिखता हूँ। हर पत्री में मेरा यही चिह्न है; मैं इसी प्रकार से लिखता हूँ। 18हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर होता रहे।

आयत 16. मूलतः यह पौलुस की वही प्रार्थना है जो पहली पत्री में पाई जाती है (1 थिस्सलुनीकियों 5:23, 28)। यह एक प्रार्थना है कि मसीह, जो निश्चित रूप से वही है जिसे यहाँ पर **शान्ति** का **प्रभु** कहा गया है, वह उन्हें शान्ति के साथ बहुतायत की आशीष देगा। रोमियों 15:33 में, पौलुस ने पिता को "शान्ति का परमेश्वर" कहा है। "शान्ति का प्रभु" विशेष रूप से उपयुक्त है, क्योंकि उसने केवल विभाजन और अनुशासन की आवश्यकता का निदान किया है (आयतें 6–15)। इसलिए उसने उन्हें स्मरण कराया कि इस प्रकार का अनुशासन जरूरी है, क्योंकि विरोधी दल ने "शान्ति के प्रभु" की इच्छा के विपरीत कार्य किया था। दूसरी ओर, यह सच है कि मसीह की शान्ति में गैर-मसीहियों के साथ हमारे रिश्तों में हमेशा विवाद का अभाव शामिल नहीं होता

(मत्ती 10:34–36)। परन्तु, जब मसीही परमेश्वर के साथ शान्ति में होते हैं (फिलिप्पियों 4:7), वे भी एक दूसरे के साथ शान्ति में होंगे।

इस शान्ति का सोता वही है जो मारा गया ताकि शान्ति परमेश्वर और मनुष्य के बीच (रोमियों 5:10) और साथ ही मनुष्य से मनुष्य पर राज्य कर सके (इफिसियों 2:14–16)। यह स्वयं प्रभु है – व्यक्तिगत रूप से प्रतिनिधित्व करने वाला नहीं – जिस पर पौलुस ने शान्ति प्रदान करने के विषय में अपना भरोसा था। उसने प्रार्थना की कि वे हर परिस्थिति में इस **शान्ति** में रहें और यह उनके पास **सदा** रहे, न कि केवल विशेष समयों पर ही। उसकी इच्छा थी कि बड़ी कठिनाई के क्षणों में भी यह वहाँ हो क्योंकि परमेश्वर की शान्ति भयंकर तूफान को भी शान्त कर सकती है। पौलुस प्रभु से शान्ति के लिए प्रार्थना करने के लिये स्वयं को नहीं रोक पाया। उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर स्वयं उनके साथ हो (मत्ती 18:20; 2 कुरिन्थियों 13:11 से तुलना)। इसके आगे, उसने उन सभी के लिए, व्यवस्था भंग करने वाले अल्पसंख्यक के लिये भी प्रार्थना की। निःसंदेह, उसमें पश्चाताप करने वालों के लिये एक आशावादी इच्छा भी शामिल है।

आयत 17. पौलुस ने इस बिंदु के साथ पत्री के पूरे भाग का समापन कर दिया, और अन्त में वह लिखा जिसे हम हस्ताक्षर कहते हैं। पौलुस की कई पत्रियाँ किसी लेखक या सचिव के माध्यम से लिखे गए थे जिन्हें प्रेरित ने पत्र (रोमियों 16:22) को लिखने में निर्देशित किया था। इसलिये, ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ पत्र, जो वास्तव में उसके नहीं थे, उन्हें पौलुस की ओर "से" (2 थिस्सलुनीकियों 2:2) बताकर प्रस्तुत किया गया था। इसलिए, उसके लिये यह आवश्यक हो गया कि वह व्यक्तिगत रूप से उसके अपने हाथ से अन्त में कुछ शब्द लिखे ताकि उनके पास ऐसे पत्रों की पहचान करने के लिए एक विशिष्ट चिह्न होगा कि वे वास्तव में उसी के थे। यूनानी वाक्यांश τῇ ἐμῇ χειρὶ Παύλου (*तेई एमेई चेइरी पौलोऊ*) का अनुवाद "मैं, (पौलुस) अपने हाथ से" किया गया है।

वे अब प्रत्येक पत्र में इस "चिह्न" को ढूँढ़ रहे थे (गलातियों 6:11; 1 कुरिन्थियों 16:21; कुलुस्सियों 4:18 से तुलना)। उन्हें अपनी अच्छी दिखने वाली लिखावट की शैली को देने के लिये उसने आयत 17 और 18 को लिखा। उस बिंदु से, वे केवल उन पत्रियों को स्वीकार करते थे जहाँ पर लिखावट उसकी लिखी हुई दिखाई देती थी।

आयत 18. शब्दों का प्रयोग लगभग 1 थिस्सलुनीकियों 5:28 के समान ही है। यह ऐसी प्रार्थना है जिसके साथ पौलुस ने सामान्य रूप से अपनी पत्रियों का समापन किया था। वास्तव में, 2 कुरिन्थियों 13:14 में लिखा है, "प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।" यह एक प्रार्थना थी जिससे थिस्सलुनीकियों के पास

सभी आशीषें हो सकती हैं कि मसीह, उसके अनुग्रह में, या अद्‌भुत कृपा के साथ उन्हें प्रदान करता रहे।

अनुप्रयोग

इस अन्तिम अध्याय ने “एक स्मरणीय-पत्री” का निर्माण किया है। इसमें कोई नई बात नहीं थी। पौलुस ने पहली पत्री और इस पत्री के पिछले भागों में उल्लेख की गई कुछ सच्चाइयों को पुन : प्रस्तुत किया।

जैसा कि पौलुस की पत्रियों की विशेषता थी, पत्री का यह अन्तिम भाग व्यावहारिक भाग है। “अन्त में” जो इस विभाजन से शुरू होता है, यह सुझाव देता है कि लिखने का मुख्य कारण प्रस्तुत किया गया है और पत्री का शेष भाग उन व्यावहारिक बातों को समर्पित है, जो दिए गए तर्क से आगे बढ़ती हैं। “अन्त में” शेष रह गए विचार को ले चलता है।”

“जब आप प्रार्थना करते हैं” (3:1, 2)

आयत 1 में पौलुस का प्रार्थना के लिये निवेदन वर्तमान काल में था। इसका अर्थ था कि पौलुस ने सुना था कि थिस्सलुनीकियों ने उसके लिए प्रार्थना की थी, और वह उनसे ऐसा करते रहने के लिए कह रहा था।

पौलुस अपने लिए विशेष प्रार्थना चाहता था। हम में से कौन एक ही प्रकार की प्रार्थना की विनती नहीं करेगा?

“प्रार्थना करें कि वचन सच्चे मनों तक फैल जाए।” वह चाहता था कि सुसमाचार “शीघ्रता से फैले।” यूनानी शब्द τρέχω (*ट्रेचो*) का अर्थ “फैल जाना” है। “शीघ्रता से फैले” और “महिमा पाए” दोनों ही वर्तमान काल में हैं, वर्णन करते हैं कि विनती लगातार तेजी से आगे बढ़ने और प्रभु के वचन की पूर्ण सफलता के लिए थी।

“प्रार्थना करें कि हम सेवा करने के लिए सुरक्षित रह सकें।” पौलुस कुछ बैरियों से छुटकारे की माँग कर रहा था जो उस समय उसके लिये समस्याएँ उत्पन्न कर रहे थे। इसका तात्पर्य यहूदियों से हो सकता है जो कुरिन्थुस में उसकी कठिनाई को बढ़ा रहे थे-यहूदी जिन्होंने प्रेरित की सेवकाई का विरोध किया था (प्रेरितों 18:1–18)। ये वे यहूदी भी हो सकते थे जिन्होंने थिस्सलुनीके और बिरिया में (प्रेरितों 17:5, 13) उसका विरोध किया था।

पौलुस जानता था कि विरोध होगा क्योंकि सब के पास विश्वास नहीं है। हमारी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है।

प्रार्थना में हमारी कुछ प्रमुख विनतियां क्या होनी चाहिए? क्या महत्वपूर्ण विनती होनी चाहिए कि हम दूसरों को हमारे लिए प्रार्थना करने के लिए कहें? निश्चित रूप से, ये दो सूची में उच्च स्तर पर होंगे। EC

“हमारे लिए प्रार्थना करें” (3:1, 2)

पौलुस उत्सुकता से विश्वास करता है कि परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है। वह कलीसिया के लिए अक्सर प्रार्थना करता था और अक्सर कलीसिया से अपने लिए प्रार्थना करने के लिए कहता था। प्रार्थना वह कार्य है जिसमें हम आराधना में परमेश्वर से बात करते हैं। जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हम धन्यवाद देते हैं, विनतियों को रखते हैं, या बस अपनी भावनाओं को परमेश्वर के सामने रखते हैं। “धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है” (याकूब 5:16ब)। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को निम्नलिखित विषय के लिए प्रार्थना करने के लिए कहा :

“परमेश्वर का वचन शीघ्रता से फैल जाए” (आयत 1)। “प्रभु का वचन” सुसमाचार है (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 2:8)। पौलुस ने आशा व्यक्त की कि यीशु का सुसमाचार “तेजी से फैल जाए,” एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अति वेग से दौड़ रहा है। कल्पना करो; एक छड़ी जो एक रिले दौड़ में जल्दी से एक से दूसरे को दी जाती है; इसी प्रकार पौलुस ने सुसमाचार के फैलने की कामना की थी। भजन संहिता 147:15 परमेश्वर के बारे में कहता है, “वह पृथ्वी पर अपनी आज्ञा का प्रचार करता है, उसका वचन अति वेग से दौड़ता है।”

“कि प्रभु का वचन ... महिमा पाए” (आयत 1)। “महिमा पाए” से पौलुस का अर्थ है कि वचन के महत्व को सुसमाचार के सुनने वालों द्वारा गंभीरता से लिया जाएगा, इसे परमेश्वर के संदेश के रूप में ग्रहण करें, किसी मनुष्य के दर्शनशास्त्र की बातों के रूप में नहीं।

थिस्सलुनीकियों ने संदेश को अच्छे से ग्रहण किया, और पौलुस ने इसके लिए उनकी सराहना की (आयत 1)। उन्होंने प्रभु के वचन को ऊपर उठाया और उसकी महिमा की। पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों 2:13 में इसी के समान कुछ लिखा, “इसलिये हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुँचा, तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया; और वह तुम विश्वासियों में जो विश्वास रखते हो, प्रभावशील है।” सुसमाचार को परमेश्वर के संदेश के रूप में गले लगाना महत्वपूर्ण बात है। सुसमाचार “हर एक विश्वास करने वाले के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है” (रोमियों 1:16)।

“और हम टेढ़े और दुष्ट मनुष्यों से बचे रहें क्योंकि हर एक में विश्वास नहीं” (आयत 2)। हर कोई सच्चाई को ग्रहण नहीं करता है। सभी को विश्वास करने के लिए आमंत्रित किया जाता है, परन्तु हर कोई इस अवसर का लाभ नहीं उठाता है। पौलुस ने उन लोगों की ओर इशारा किया, जिन्होंने उन सिद्धान्तों को नकार दिया, जो उसने और उसके सहकर्मियों ने बताए थे। ये “टेढ़े और दुष्ट

लोग" सम्भवतः यहूदी थे जिन्होंने यीशु मसीह के संदेश को ग्रहण नहीं किया। वे अकसर पौलुस और उसके समूह का विरोध करते थे।

प्रेरितों 17 में, पौलुस ने यूनानियों से मिली सफल प्रतिक्रिया का आनन्द लिया, परन्तु यहूदियों ने डाह से भरकर "बाज़ारू लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों" के साथ भीड़ को उकसाया (प्रेरितों 17:5)। शायद पौलुस ने इस घटना को देखा था या उसके मन में इस प्रकार की बात थी जब उसने आयत 2 को लिखा था। यह उस विवाद के कारण था कि उसे बिरिया को छोड़कर आगे बढ़ना पड़ा।

कुरिन्थुस में, यहूदियों के आरोपों के कारण पौलुस पर गल्लियो के सामने मुकदमा चलाया गया था लूका ने लिखा, "जब गल्लियो अखाया देश का हाकिम था तो यहूदी लोग एका करके पौलुस पर चढ़ आए, और उसे न्याय आसन [βῆμα, *बेमा*] के सामने लाए" (प्रेरितों 18:12)। कोई आश्चर्य नहीं कि उसने ऐसे पुरुषों से "बचाए जाने" के लिए प्रार्थना करने को कहा।

जिस प्रकार थिस्सलुनीकियों को उन विशेष मुद्दों के लिये प्रार्थना करना था, जिनका वे सामना करते थे, वैसे ही हमें भी अपनी परिस्थितियों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, जिसमें वचन का प्रचार प्रसार करना और "दुष्ट लोगों" से बचाया जाना शामिल हो। हमें सुसमाचार को पूरे विश्व में फैलाने के लिए प्रार्थना करना चाहिए, विशेष देशों और समुदायों के लिए प्रार्थना करें, और प्रार्थना करें कि दरवाज़े खुल जाएँ ताकि अधिक से अधिक लोग मसीह के द्वारा परमेश्वर के उद्धार के वरदान को गले लगाए। इसके अतिरिक्त, हमें उद्धार के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। विभिन्न देशों में धार्मिक स्वतंत्रता के विभिन्न स्तर हैं, परन्तु मसीही हर जगह उन लोगों का सामना करते हैं जो परमेश्वर के वचन को फैलाने का विरोध करते हैं। आइए हम सार्वजनिक रूप से, व्यक्तिगत रूप से और उत्साह के साथ प्रार्थना करें कि सुसमाचार को पृथ्वी के छोर तक पहुँचने से कोई भी रोक नहीं पाएगा। EE

"प्रभु सच्चा है" (3:3)

दूसरी आयत के अंत में पौलुस ने लिखा, "हर एक में विश्वास नहीं।" शब्दों के साथ अठखेलियाँ करते हुए उसने यह कथन कहे, "परंतु प्रभु सच्चा है।" परमेश्वर की विश्वासयोग्यता बुरे मनुष्य का विश्वासयोग्य बने रहने के विपरीत है। "प्रभु सच्चा है" का क्या अर्थ है?

हम उस पर भरोसा कर सकते हैं। लोग अक्सर अपनी प्रतिज्ञाओं को तोड़ते हैं लेकिन परमेश्वर कभी भी ऐसा नहीं करता है (रोमियों 3:4; 1 कुरिंथियों 1:9; 2 कुरिंथियों 1:18; 1 थिस्सलुनीकियों 5:24; इब्रानियों 6:18)। सभी मसीहियों को उससे प्रार्थना करनी चाहिए और उन्हें यह समझना चाहिए कि वह उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा।

वह हमें "सामर्थ्य" देगा। परमेश्वर सर्वशक्तिमान है। यीशु ने कहा, "परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है" (मत्ती 19:26b)। सामर्थ्य या बल देने के लिए यूनानी शब्द στηρίζω (*स्टेरिद्‌जो*) है, जिसका तात्पर्य स्थिर या दृढ़ करना है। जिस तरह बाढ़ के समय हजारों रेत की बोरियों के द्वारा बांध को सहारा दिया जा सकता है उसी तरह परमेश्वर हमारी सहायता करता है। मसीह ने जगत के अंत तक हमारे साथ रहने की प्रतिज्ञा की है (मत्ती 28:20)। पौलुस ने इस ईश्वरीय सहायता को समझा जब उसने लिखा, "जो मुझे सामर्थ्य देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूँ" (फिलिप्पियों 4:13)।

वह हमारी "रक्षा" करेगा। पौलुस ने लिखा कि परमेश्वर थिस्सलुनीकियों की "दुष्ट" से रक्षा करेगा। यूनानी शब्द πονηρός (*पोनेरोस*) का सामान्य अर्थ दुष्ट या NASB के अनुसार "evil one" अर्थात शैतान हो सकता है। "Evil one" शैतान को दर्शाता है (देखें इफिसियों 6:16)। "दुष्टता" वे कार्य हैं जो शैतान करता या करवाता है। परमेश्वर की सुरक्षा का रूपक यह है कि परमेश्वर अपने लोगों को नुकसान से दूर रखेगा और उसके बनाए गए शहरपनाह के द्वारा घिरे रहेंगे।

परमेश्वर हमें परीक्षा पर जय पाने की सामर्थ्य देता है। वह हमारी रक्षा उनसे करता है जो हमसे अधिक बलशाली हैं। पौलुस ने कुरिंथियों के भाइयों को इसी प्रकार के शब्दों से उत्साहित किया, "तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है और परमेश्वर सच्चा है; वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, बल्कि परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको" (1 कुरिंथियों 10:13)। जब परीक्षा आती है तो हमें उससे बाहर निकलने का राह भी देखना चाहिए; परंतु परमेश्वर हमारे प्रति विश्वासयोग्य रहेगा और हमें सामर्थ्य देगा और दृढ़ बने रहने के लिए सुरक्षा भी प्रदान करेगा।
EE

"हमें प्रभु में तुम्हारे ऊपर भरोसा है" (3:4)

पौलुस को इस बात का भरोसा था कि जो आज्ञाएं वह थिस्सलुनीकियों को दे रहा था वे उनका पालन करेंगे। उसको उन पर इतना भरोसा क्यों था? कलीसिया ऐसा क्या कर रही थी जिसने उसको यह भरोसा दिलाया कि वे उसके उपदेशों को थामे रहेंगे?

पौलुस का भरोसा "प्रभु में" था। वह उन पर विश्वास करता था क्योंकि उसने देखा कि उनके पाप क्षमा किए गए हैं और वे "प्रभु में" आज्ञाकारी विश्वासी थे। हम भी उन लोगों के प्रति जो प्रभु में हैं, और उन पर अधिक भरोसा कर सकते हैं क्योंकि वे मसीही सिद्धांत में विश्वासयोग्य बने रहते हैं। हमारा भरोसा लोगों पर नहीं बल्कि परमेश्वर पर है जिसने उन्हें अंधकार से ज्योति में लाया (कुलुस्सियों 1:13; 1 यूहन्ना 1:7)।

पौलुस को यह विश्वास था कि वे वही करेंगे जो उसने उन्हें करने की आज्ञा दी है। उसकी आज्ञाएं उसकी अपनी नहीं थी (1 कुरिंथियों 14:37)। वे ऐसी "परंपराएं" थीं जो उसने उन्हें परमेश्वर की ओर से दी थी (2 थिस्सलुनीकियों 2:15)। वे इन आज्ञाओं को थामे रहे और परीक्षा के समय उन पर विश्वासयोग्य बने रहे (1:4)।

पौलुस को विश्वास था कि वे वही करेंगे जो उसने उन्हें करने की आज्ञा दी थी। सचमुच उनका हृदय परिवर्तन हुआ था और वे कठिन समयों का सामना करते रहेंगे। पौलुस के मन में यहाँ उस विचार का एक भाग दिखाई देता है जिसे वह आयत 6 में कहने जा रहा है कि वे अपने आपको "अनुचित चाल चलने" वालों से दूर रखें। केवल वह यह नहीं कह रहा था कि वे उन आज्ञाओं को स्मरण रखेंगे। बल्कि उसने उनकी क्षमता पर भरोसा किया था कि जब वे कठिन निर्णय लेंगे तब भी वे उन आज्ञाओं का पालन करते रहेंगे; जैसे कि वे अपने आपको अनुचित चाल चलने वाले भाइयों या बहिनों से बचाए रखेंगे।

हमारे बारे में क्या है? क्या हम कठिन समय में भी आज्ञाओं का पालन करते हैं? हम कुछ प्राथमिक बातों जैसे : पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा; हफ्ते के प्रथम दिन जमा होना और कलीसिया में प्राचीनों और डीकनों की नियुक्ति करना, पर ही ध्यान रखते हैं। कठिन आज्ञाओं के बारे में हमारी क्या राय है? क्या हम अनुचित चाल चलने वालों से दूर रहते हैं? क्या हम आज्ञा न मानने वालों को निरुत्साहित करते हैं? क्या हम भाइयों या बहिनों का जब उनको हमारी सबसे अधिक आवश्यकता होती है तो प्रेम से उनका सामना करते हैं? परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम उस प्रकार की कलीसिया बने जिसके बारे में वह घमंड के साथ कह सके, "मैं जानता हूँ कि वह सबसे अप्रिय आज्ञा का भी पालन करेगी!" EE

मसीह की ओर अपने मनों को फेरना (3:5)

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को उत्साहित करने और उनके समर्पण पर भरोसा जताया, उसने मसीह से विनती की कि वह अपनी ओर उनके विचारों, इच्छाओं और भावनाओं को निर्देशित करे। हमें अपना मन निम्नलिखित बातों पर लगाना चाहिए …

"परमेश्वर के प्रेम के प्रति।" पौलुस ने हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम का हवाला दिया है (रोमियों 5:5, 6)। उसका प्रेम हमको उससे प्रेम करने के लिए प्रेरित करता है (2 कुरिंथियों 5:14, 15)। जब हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं तो हम उसके वचन को मानते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं (यूहन्ना 14:23)।

"मसीह के धीरज के प्रति।" पौलुस ने प्रार्थना की कि कलीसिया को उसी प्रकार सहनशील होना है जिस प्रकार की सहनशीलता मसीह ने दिखाई थी। यीशु के परिवार के लोगों ने ही उसका अपमान किया और अधिकारियों ने भी

उसकी निंदा की। एक चेले ने तो उसको पकड़वाया भी। उसके लोगों ने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। इसके बावजूद भी वह हमारे उद्धार के लिए क्रूस की मृत्यु सहने के लिए तैयार हुआ।

हमें "यीशु की ओर ताकते रहना है," हमारे जीवन में जो बाधाएं आती है उनके कारण निराश नहीं होना है (इब्रानियों 12:2)। हम किन समस्याओं का सामना कर रहे हैं? चाहे हमारा संघर्ष घर में, कलीसिया में, कार्यालय में, या विद्यालय में हो, हम मसीह को ही ताकते रहें क्योंकि वही हमें इन सभी समस्याओं का सामना करने की सामर्थ्य प्रदान करेगा। EE

परमेश्वर हमारे लिए क्या कर सकता है (3:3–5)

हमारे भाइयों को उत्साहित करने का एक तरीका यह है कि उनके सम्मुख परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को थामे रहना है। पौलुस इन्हीं बातों को स्मरण दिलाते हुए अपनी पत्री प्रारंभ करता है। वह चाहता था कि उसके भाई लोग यह जाने कि परमेश्वर उनके साथ है और उनकी परिस्थिति के अनुसार वह उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा।

"वह अपनी सामर्थ्य तुम्हें देगा।" जब वे सच्चाई और विश्वास में दृढ़ रहेंगे तो परमेश्वर उनको उत्साहित करेगा। वह अपने बच्चों को स्थिर करेगा।

"वह शैतान से तुम्हारी रक्षा करेगा।" उसकी विश्वासयोग्यता शैतान से उनकी रक्षा करेगा। दुष्ट, गरजने वाला सिंह के समान न इस खोज में रहता है कि कितनों को फाड़ खाए (1 पतरस 5:8)। हमको यीशु के द्वारा परमेश्वर की शरण की निरन्तर आवश्यकता है।

"वह तुम्हारे मनों को परमेश्वर के प्रेम के प्रति निर्देशित करेगा।" वे अपने प्रति परमेश्वर के गहरे प्रेम और परमेश्वर के महान प्रेम की ओर निर्देशित किए जाएंगे। परमेश्वर सदैव अपने प्रेम में हमको बनाए रखने में व्यस्त रहेगा।

"वह तुम्हें मसीह की विश्वासयोग्ता की ओर ले जाएगा।" "विश्वासयोग्यता" यहाँ एक उत्तम अनुवाद होगा। यह धीरज से बाट जोहना नहीं है परंतु इसका अर्थ धैर्य धरना है। दूसरे शब्दों में, वह उनसे कह रहा था कि वे अपने मनों में उसी तरह का धैर्य धरें जिस प्रकार मसीह ने भी इस धरती पर रहते हुए सताव के समय धैर्य दिखाया था।

परमेश्वर अपने बच्चों के लिए क्या करेगा? वह हमें दृढ़ करेगा, शैतान से सुरक्षित रखेगा और अपने प्रेम के प्रति निर्देशित करेगा और मसीह के धैर्य की ओर ले जाएगा। क्या हम प्रसन्न नहीं हैं? हमारा कितना अद्भुत स्वर्गीय पिता है! EC

अनुचित चाल चलन के साथ बर्ताव (3:6–12)

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को यह निर्देश दिया कि उन्हें समाज में एक

साथ कैसे रहना चाहिए। उसने उनसे क्या कहा? भाइयों को एक साथ कैसे रहना चाहिए?

"अनुचित चाल चलने वालों से दूर रहो।" उनको उनके साथ मित्रता नहीं करनी थी जो अनुचित चाल चलते थे या फिर उस भाई से जो आलसी था। अनुचित "disorderly" (KJV) सैन्य शब्द है और इसका अर्थ उनसे है जो "रैंक से बाहर" है।

उसने यह आज्ञा "प्रभु यीशु के नाम" में थी। यह पौलुस का अधिकार सूचक प्रकटीकरण है। फिर भी, उसी समय, पौलुस अनुचित चाल चलने वाले को "भाई" करके संबोधित करता है। उसके साथ अन्यजातीय व्यक्ति के समान व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि परिवार के एक सदस्य के समान व्यवहार किया जाना चाहिए।

अलग होना "withdraw" (KJV) पतवारों को एक साथ एकत्रित करना या गंदे वस्त्रों को एक साथ एकत्रित करना जो घृणा का प्रतीक है, का चित्र प्रस्तुत करता है। इसका तात्पर्य वरिष्ठता के आधार पर अपने आपको अलग नहीं करना है परंतु इसका प्रतीक यह है कि हम अनुचित कार्य करने वालों के कार्यों से सहमत नहीं हैं।

मनुष्य का आलसीपन जिसका यहाँ वर्णन किया जा रहा है, यह दर्शाता है कि आलसी मनुष्य ने सुसमाचार की प्रेरणा का तिरस्कार किया था। जिस भाई ने कार्य करने से इनकार किया था उसके साथ संगति या सामाजिक गतिविधि नहीं रखनी थी।

"हमारा अनुकरण करो।" पौलुस जब उनके साथ था तो उसने एक उदाहरण उनके सम्मुख छोड़ा। इस प्रकार उसने उनसे आग्रह किया था कि वे उस व्यक्ति को न खिलाएं जो कार्य न करता हो। यहाँ पौलुस उस व्यक्ति के बारे में बात कर रहा है जो आलसी है और जो कार्य न करना चाहता हो। इस प्रकार के व्यक्ति को दूसरे पर निर्भर होकर नहीं खाना चाहिए। बल्कि, उनको उसको डांटना चाहिए।

यहाँ हम सब की एक जिम्मेदारी है; किसी को भी इसके प्रति घृणा नहीं करनी चाहिए। हमें उस मसीही को चेताना है जो अपना कर्तव्य निभाने से चूक जाता है। जब इस प्रकार डांट लगाई जाती है तो हम डांट खाने वाले को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं बल्कि हम उस पर कड़ा प्रेम संचालित करते हैं जो उसकी आदतों को और टूटे जीवन को सुधारने में सहायता करेगा। EC

अनुचित चाल चलने वालों से दूर रहो (3:6–18)

परमेश्वर ने मूसा को उसके लोगों को मिस्र से निकालने का आदेश दिया (निर्गमन 3:10)। मूसा ने परमेश्वर की सामर्थ्य के द्वारा कई आश्चर्यकर्म दिखाए ताकि इस्राएली यह जाने कि वह परमेश्वर का सेवक है। फिर भी मरुभूमि की

यात्रा के दौरान कोरह, दातान और अबीराम ने मूसा और उसके भाई हारून के खिलाफ बलवा किया (गिनती 16:3)। ये व्यक्ति अनुचित चाल चलने लगे और परमेश्वर के अगुओं के विरूद्ध खड़े हुए। उनके बलवा करने के कारण परमेश्वर ने मण्डली से कहा, "तुम उन दुष्ट मनुष्यों के डेरों के पास से हट जाओ" (गिनती 16:26)। इसका तात्पर्य यह हुआ कि "तुम अपने आपको उनसे अलग कर लो!" तब परमेश्वर ने उनके पैरों तले की भूमि फाड़ दी और भूमि ने उनको निगल लिया (गिनती 16:31–33)।

इससे यह स्पष्ट है कि परमेश्वर की मांग को गम्भीरतापूर्वक लेना चाहिए और उसको मानना चाहिए। कभी-कभी आज्ञा न मानने वालों को वह स्वयं दण्ड देता है (गिनती 16)। लेकिन कभी-कभी वह अपने लोगों को उन्हें अनुशासित करने के लिए कहता है (2 थिस्सलुनीकियों 3)। दोनों परिस्थितियों में, आज्ञा मानने वालों और बलवा करने वालों के मध्य विभेद किया गया है।

"अनुचित चाल चलने वाले जीवन" का अर्थ। इसके लिए यूनानी शब्द ἀτάκτως (*अटाक्टोस*) प्रयोग किया गया है, और इसका सामान्य अर्थ "भली आज्ञा के विरूद्ध, अनुचित चाल।"[20] रॉबर्टसन के अनुसार यह एक "सैन्य शब्द" है जिसका अर्थ "रैंक के बाहर" है।[21] यहाँ परमेश्वर के एक सिपाही का चित्र है जो अपने कमांडर की आज्ञा मानने से इनकार करता है। बाइबल कई प्रकार के अभक्तिपूर्ण व्यवहार प्रस्तुत करती है : लैंगिक अनैतिकता, मूर्तिपूजा, निंदा, पियक्कड़पन, ठगी, फूट, झूठी शिक्षा, आलसीपन, और चुगली (1 कुरिंथियों 5:11; तीतुस 3:10; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6–15; 2 यूहन्ना 9–11)। इनमें से कोई भी व्यवहार या अन्य कोई ऐसा व्यवहार जो परमेश्वर की शिक्षा के विरूद्ध बलवा है वह अनुचित चाल है।

दूसरा थिस्सलुनीकियों 3 अध्याय, में पौलुस ने एक विशेष समस्या को सम्बोधित किया है। कुछ थिस्सलुनीकियों ने पौलुस के प्रभु के द्वितीय आगमन के संदेश को ठीक से नहीं समझा (2 थिस्सलुनीकियों 2:1–5)। उन्होंने कार्य करना बंद कर दिया था और दूसरों पर निर्भर होने लगे थे (आयत 8)। ग्यारहवीं आयत में पौलुस ने कहा, "हम सुनते हैं कि कुछ लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं, और कुछ काम नहीं करते पर दूसरों के काम में हाथ डाला करते हैं।" RSV के अनुसार वे "आलसी" हैं। पौलुस ने निर्देश दिया कि इन लोगों को चेताना चाहिए और भौतिक रूप से उनकी सहायता नहीं करनी चाहिए (आयत 15)। माता-पिता को अपने बच्चों को आलस न करने के लिए सिखाना चाहिए। अगुओं को अपने कलीसिया के लोगों को यह सिखाना चाहिए कि वे मेहनती बनें। सरकार को नागरिकों को यह समझाना चाहिए कि अपनी सहायता करने के लिए वे जिम्मेदारी उठाएं।

उपद्रवी जीवन : प्रेरितों की शिक्षा का उल्लंघन। जब पौलुस थिस्सलुनीके में था तो उसने उन्हें व्यक्तिगत रूप से शिक्षा दी और परम्पराएं बताईं (आयत

6)। अनुचित व्यवहार जिसका उसने यहाँ वर्णन किया है, उन मौखिक शिक्षाओं के विरुद्ध था जो उसने उन्हें दी थीं।

कई बार पौलुस की मौखिक शिक्षा आलसीपन और अनुचित चाल चलने के विरुद्ध थी। छठी आयत में उसने आज्ञा दी कि भाई लोग अनुचित चाल चलने वालों से अलग रहें और "जो शिक्षा उसने [हम से] पाई" उसको वे थामे रहें। दसवीं आयत में उसने कहा, "क्योंकि जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए।" 1 थिस्सलुनीकियों 4:11 में पौलुस ने कलीसिया को स्मरण दिलाया "जैसी हम ने तुम्हें आज्ञा दी, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना काम काज करने, और अपने-अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो।" 2 थिस्सलुनीकियों 3:12 में पौलुस ने वैसा ही निर्देश दिया, "ऐसों को हम प्रभु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें।"

इसके साथ ही पौलुस की परिश्रमशीलता की आज्ञा का अनुमोदन करने के साथ-साथ, उसने कलीसिया को उसका अनुकरण करने को भी कहा (आयतें 7–9; तुलना करें 1 कुरिंथियों 11:1)। जिस प्रकार एक दर्जिन नमूने से वस्त्र सीतीं हैं तो उसी प्रकार पौलुस चाहता था कि थिस्सलुनीकियों को भी उसके शिक्षा के नमूने के अनुसार जीवन जीना चाहिए। पौलुस उनके मध्य कैसा रहा? उसने किसी के ऊपर बोझ न बनने के लिए कठोर परिश्रम किया (आयत 8)। यद्यपि कलीसिया से सहायता मांगने का उसका अधिकार बनता था (1 कुरिंथियों 9:1–14), फिर भी उसने कलीसिया के लिए आदर्श बनने हेतु इस अधिकार को त्याग दिया (आयत 9)। जब वह उनके साथ था तो उसने कठोर परिश्रम किया ताकि वह उनकी आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके और अपना भार स्वयं वहन कर सके। अनुचित चाल चलने वालों ने पौलुस की इस शिक्षा की और जो जीवन उसने जीया था, उसकी उपेक्षा की थी। उन्होंने पौलुस का थोड़ा आदर किया और उसके भेजने वाले का बहुत कम आदर किया।

अनुचित चाल चलने वालों के लिए परमेश्वर की आज्ञा। पौलुस ने अनुचित चाल चलने वालों को आज्ञा दी कि वे "चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें" (आयत 12)। उनको आवारागर्दी या चुगली छोड़कर कार्य प्रारंभ करना चाहिए। उनको खुद अपनी जिम्मेदारी उठानी चाहिए और मसीही शिक्षा को अपने जीवन से प्रगट करना चाहिए।

जो विश्वासयोग्य है उनसे पौलुस ने कहा, "तुम, हे भाइयो, भलाई करने में साहस न छोड़ो। यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने तो उस पर दृष्टि रखो, और उसकी संगति न करो, जिससे वह लज्जित हो" (आयतें 13, 14)। यह निर्देश कलीसिया के सब लोगों के लिए था। उसने उन्हें उत्साहित किया कि वे "साहस न छोड़ें" और बुरे व्यवहारों को नजरंदाज कर दें, उन पर

वे “दृष्टि रखें” ताकि कलीसिया अनुचित चाल चलने वालों के विरूद्ध उचित कार्यवाही कर सके।

आज का समाज उस व्यक्ति के विरूद्ध खड़ा हो जाता है जो किसी को सुधारने, डांटने या अनुशासन करने का प्रयास करता है। फिर भी, बाइबल किसी भाई या बहन को, जब उनको अनुशासन की आवश्यकता होती है तो उसको कैसे अनुशासित किया जाना चाहिए, का मापदण्ड देती है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि भटके हुओं को उचित मार्ग में लाने के लिए अनुशासन अच्छा होता है न कि उनके लिए जो अनुशासन कराते हैं।

नया नियम यह शिक्षा देता है कि एक संगी मसीही को उसके प्रति प्रेम और दया के कारण डांटना चाहिए। दूसरा थिस्सलुनीकियों 3:15 कहता है, “तौभी उसे बैरी मत समझो, पर भाई जानकर चिताओ।” मत्ती 18 में, यीशु ने सिखाया कि अनुचित चाल चलने वाले भाई को पहले एकांत में समझाया जाए, उसके बाद एक या दो गवाह के बीच में समझाया जाए और अंत में मामला अभी भी नहीं सुलझता है तो उसको कलीसिया के पास लाया जाए। गलातियों 6:1 में पौलुस ने लिखा कि यदि कोई पाप करते हुए पकड़ा जाए तो उस व्यक्ति को “नम्रता” के साथ समझाया जाए।

उस स्थिति में क्या होगा यदि वह व्यक्ति बदलना न चाहे? तब, पौलुस ने कहा, “उसकी संगति न करो” (आयत 14)। इसमें सार्वजनिक उद्घोषणा भी शामिल है (देखें 1 कुरिंथियों 5:4, 5)। इसमें उसको ताड़ना देने के अलावा उसके साथ संबंध तोड़ना शामिल है।

इतना कठोर दण्ड क्यों? इसका पहला उद्देश्य यह है कि अनुचित चाल चलने वाले को बचाना है, “ताकि उस की आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए” (1 कुरिंथियों 5:5)। किसी व्यक्ति को कलीसिया की संगति से इस आशा से हटाया जाता है कि वह उस संगति को स्मरण करे जो किसी समय कलीसिया के साथ वह किया करता था और मसीह और कलीसिया के पास परिवर्तित हृदय के साथ लौट आए। दूसरा उद्देश्य कलीसिया को इस प्रकार की मलिनता से शुद्ध रखना है। पौलुस ने लिखा, “क्या तुम नहीं जानते, कि थोड़ा सा खमीर पूरे गूंधे हुए आटे को खमीर कर देता है?” (1 कुरिंथियों 5:6)। यदि थोड़ा पाप भी छोड़ दिया जाए तो वह पूरी कलीसिया को नाश कर सकता है।

यदि कोई कलीसिया की संगति से निष्कासन पर विश्वास नहीं करता है तो क्या होगा? इस शिक्षा का त्याग करने का तात्पर्य यह हुआ कि इस शिक्षा का त्याग करने वाला व्यक्ति अपने आपको यीशु और उसके प्रेरितों की आज्ञा के ऊपर समझता है। पौलुस ने यीशु के अधिकार से लिखा, “हे भाइयो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं” (आयत 6)। कुछ कलीसियाएं अपने आपको इस प्रकार के लोगों से अलग रखने की शिक्षा पर विश्वास करते हैं लेकिन इस संबंध में वचन स्पष्ट शिक्षा देता है। एक आज्ञाकारी

कलीसिया, पापी तथा प्रभु की कलीसिया की खातिर अनुशासनात्मक कार्यवाही, जो वचन के अनुसार है, करेगी।

क्या हम यह मानते हैं कि परमेश्वर कोरह, दातान और अबीराम से प्रेम नहीं करता था? हाँ परमेश्वर उनसे प्रेम करता था, लेकिन परमेश्वर ने उन्हें इसलिए नाश किया क्योंकि उनका बलवा संक्रमणकारी हो सकता था। अनुशासन पापी मनुष्य तथा कलीसिया की भलाई के लिए है। परमेश्वर चाहता है कि हरेक झुण्ड में से कोई न कोई उद्धार पाए इसके बजाय कि वह हम सबको खो दे। परमेश्वर यह भी चाहता है कि हम उसकी आज्ञाओं को गम्भीरता से लें और उनका पालन करें! EE

अंतिम उपदेश (3:13–15)

अंतिम वचन। वे हमारे साथ लंबे समय तक रहते हैं और उन पर हम सबसे महत्वपूर्ण विचार रख सकते हैं। इसलिए उसकी महत्वता अधिक है और दीर्घायु भी है। इन प्रिय थिस्सलुनीके वासियों के लिए पौलुस के अंतिम वचन कौन से हैं?

"भलाई करने में साहस न छोड़ो।" "साहस न छोड़ना" का अर्थ "निराश न होना है।" "भलाई करना" का सीधा अर्थ "अच्छी बातें/कार्य करना" है। फिर भी जितनी प्रभु के आगमन में देरी होगी और दूसरे चाहे कैसे भी अनुचित बातों में क्यों न लग जाएं, हमें अपने आपको सर्वोच्च स्तर के आचरण से सुशोभित करते रहना है।

"आज्ञा न मानने वाले न बनो।" पौलुस का मानना था कि जो पत्री उसने लिखी वह पवित्र आत्मा की प्रेरणा से थी। उनको उसे मानना था। इसलिए उसने उनसे कहा, "जो मैंने आज्ञा दी है उसको करो।"

"एक दूसरे से प्रेम रखो।" पौलुस ने कलीसिया को दिशा निर्देश दिए कि उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने की स्थिति में क्या किया जाए। उसके दिशा निर्देश तीन रूपी थे : (1) आज्ञा न मानने वाले पर "दृष्टि रखना" (आयत 14)। यहाँ क्रिया "दृष्टि रखना" का तात्पर्य किसी बात पर विशेष ध्यान देने से है। कलीसिया को उसको अस्वीकृति के चिह्न से चिन्हित करना था। (2) जिसने इन आज्ञाओं को मानने से इनकार किया था उसके साथ विश्वासियों को संगति नहीं रखनी थी (आयत 14)। यूनानी भाषा में इस शब्दांश का अर्थ "उसके साथ अपने आपको मत मिलाओ" है। (3) जो भाई पाप करता है उसको चेतावनी देनी चाहिए थी। इस क्रिया का अर्थ, "उसको सच्चाई के प्रति सचेत करना है।" जब इन तीनों निर्देशों को एक साथ मिला लिया जाता है तो हमें स्थिर रहने वाले प्रेम के बारे में स्पष्ट पता चलता है।

पौलुस की मसीह के लिए जीने की योजना क्या है? परमेश्वर के वचन का उल्लंघन न करो, एक दूसरे से ऐसे प्रेम करो कि दूसरे की गलती को प्रेम से

सुधार सको, और अपने अच्छे कार्यों और अच्छा जीवन जीने के लिए निराश न हो। EC

आशीर्वाद (3:16, 17)

आशीर्वाद का उच्चारण कलीसिया में आमतौर पर अंत में किया जाता है। ये वे वचन हैं जिनका उच्चारण कर पौलुस अपने पाठकों को विदा करता था और उनके साथ अपने बिताए समय को समाप्त करता था।

इस पत्री में अब तक पौलुस के शब्दों को एक शास्त्री ने उसके लिए लिखा था। अब उसने स्वयं कलम उठाया और उपसंहार लिखा। उसने कहा, यह अंतिम हस्ताक्षर, उसकी सभी पत्रियों में उसकी पहचान है।

"तुम्हें उसकी शांति मिले।" उसने ऐसी प्रार्थना की कि उनको ऐसी शांति मिले जो सर्वदा उन पर बनी रहे और चाहे कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो वह उनसे न हटे। उसने यह भी प्रार्थना की कि प्रभु के कारण वह (प्रभु तुम सबके साथ रहे) उनके मन में बना रहे।

"उसका अनुग्रह तुम्हारे साथ बना रहे।" परमेश्वर का अनुग्रह का तात्पर्य क्षमा और उद्धार है।

"प्रभु तुम्हारे साथ रहे।" प्रभु की उपस्थिति का तात्पर्य संगति, सुरक्षा और उद्देश्य है। उसकी उपस्थिति का तात्पर्य यह हुआ कि हम उसकी इच्छा और लक्ष्य को पूरा कर रहे हैं।

इस प्रकार की इच्छा हमें आत्मिक चंगाई और सर्वसंपन्नता का आश्वासन देती है। अनुग्रह हमारे पापों को ढांपता है और परमेश्वर के साथ हमारे उचित संबंध स्थापित करता है। शांति परमेश्वर के सम्मुख हमारे मनों को स्थिर करती है। हमारे जीवन में यीशु की उपस्थिति हमें प्रतिदिन जीने का उद्देश्य प्रदान करती है। पौलुस अपने पाठकों के लिए सबसे कुलीन और सर्वोत्तम की कामना कर रहा है। EC

सच्ची शांति (3:16, 17)

जब पौलुस शांति के बारे में बातें करता है तो वह आत्मा और प्राण की स्थिरता के बारे में बातें करता है। यह शांति, किसी व्यक्ति का परमेश्वर के सम्मुख शांति का द्योतक है क्योंकि वह जानता है कि परमेश्वर के साथ उसका उचित संबंध है और परमेश्वर में वह विश्राम पा रहा है। इस आधिकारिक शांति के विभिन्न पहलू भी है।

ईश्वरीय प्रवृति। केवल प्रभु ही इस प्रकार की शांति दे सकता है। प्रभु हमें क्षमादान देता है और अपने आपको और दूसरों को क्षमा करने के लिए हमें प्रेरित करता है।

एक सतत् गुण। हम सब प्रकार के दिनों का सामना करते हैं : अच्छे दिन, बुरे दिन, और सामान्य दिन। यह शांति सब प्रकार के दिनों, चाहे वे कैसे भी क्यों न हो, के लिए है।

"बेपरवाह" उपस्थिति। हमारे जीवन में कई प्रकार की परिस्थितियां आती हैं। ये परिस्थितियां क्रूर व बेरहम हो सकती हैं। इन विषम परिस्थितियों के होते हुए भी प्रभु की शांति हमारे मन में बनी रहती है।

अधिकांश परिस्थिति में, शांति को छोड़कर संसार में सब कुछ है। यहाँ वे सभी चीजें है जिससे धन खरीद सकता है, जो मित्र दे सकते हैं और जो एक परिवार उपलब्ध करा सकता है लेकिन सच्ची शांति इनमें से कोई भी नहीं दे सकता है। शांति की पुकार हमारे मन के अंदर से आती है; कोई इसे नहीं देख सकता है, लेकिन हम सब इसका अनुभव कर सकते हैं। जब हम अपने जीवन में शांति की जरूरत समझते हैं और हमें यह पता नहीं होता है कि प्रभु इसकी पूर्ति हमारे जीवन में कैसे करता है, तो हमें केवल इतना समझना चाहिए कि हम उस मार्ग से अनभिज्ञ हैं जो हमें सबसे तीव्र और गहरी इच्छा की पूर्ति की ओर ले चलता है।

होने दे कि शांति का प्रभु अपने अनुग्रह और उपस्थिति के द्वारा हमें अपनी शांति दे। EC

परमेश्वर के सेवक (3:6–18)

अधिकांश लोगों के लिए कार्य उनकी जरूरत है। हमें अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्य करना चाहिए। नया नियम मसीहियों को "मजदूर," "सेवक," "दास," या "सुसमाचार के कार्य करने वाले" करके संबोधित करता है। नए नियम के अनुसार हम मसीह के द्वारा परमेश्वर के सेवक हैं। हम थिस्सलुनीके के मसीहियों के संदेश से अपने कार्य के बारे में क्या सीख सकते हैं? परमेश्वर क्या चाहता है कि हम जाने, जो उसके लिए सेवक बनने में हमारी सहायता करेगा?

कार्य ईश्वरीय गतिविधि है (3:6–9)। थिस्सलुनीके के नए मसीहियों को कार्य के प्रति, जो उनके नए जीवन का भाग है, परमेश्वर का दृष्टिकोण अपनाने के लिए निर्देशित किया गया था। इन परमेश्वर के नए सेवकों के लिए, जब वे अपने नए स्वर्गीय स्वामी की सेवा कर रहे थे तो दैनिक कार्य उनके लिए एक महत्वपूर्ण सौभाग्य और कर्तव्य बन गया था।

पहली बात, शिक्षा के द्वारा उन्होंने कार्य के महत्व को समझा। पौलुस ने उनको कहा, "… वैसे ही चुपचाप रहने और अपना-अपना काम काज करने, और अपने-अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो" (1 थिस्सलुनीकियों 4:11)। जहाँ कहीं उन्होंने कार्य किया उन्होंने वहाँ प्रतिदिन परमेश्वर की सेवा की, केवल मंदिर में या किसी विशेष अवकाश के दिन में ही नहीं।

परमेश्वर के लिए कार्य करने का आदेश दिया गया है, लेकिन इस कायनात के प्रभु के द्वारा परमेश्वर के परिवार में होकर कार्य में लगाए जाने को भी एक बड़ी आशीष के रूप में देखा जाना चाहिए। हमारा एक नियोक्ता है जो हमें जानता है और पूरा-पूरा प्रेम करता है। कार्य एक आवश्यकता है लेकिन यह परमेश्वर द्वारा दी गई आशीष भी है!

दूसरी बात, थिस्सलुनीकियों ने कार्य के महत्व को उदाहरण के द्वारा जाना (3:7–9)। वास्तव में ये शिक्षक दो नौकरियां करते थे। पहली नौकरी अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु धन कमाने के लिए अपने हाथों से परिश्रम करते थे। दूसरी नौकरी, बिना तनख्वाह लिए इन नए मसीहियों को उनकी आत्मिक उन्नति हेतु "उपदेश देते, और शान्ति देते, और समझाते थे" (1 थिस्सलुनीकियों 2:11)। उनके पास इनमें से कोई भी एक कार्य करने के लिए परमेश्वर के द्वारा दिया गया अधिकार था परंतु उन्होंने दोनों कार्य किए ताकि उनके कार्य नए मसीहियों को यह सिखा सकें कि वे अपने दैनिक जीवन में परमेश्वर के लिए सेवक बने। परमेश्वर के लिए एक सेवक बने!

कुछ लोग कार्य नहीं करेंगे (3:10–12)। सभी के मन में कार्य के प्रति अच्छा दृष्टिकोण नहीं होता है। कुछ इसे "बुरा" मानते हैं तो कुछ इससे बचना चाहते हैं। कुछ लोग घूमने-फिरने या दूसरों की मेहनत पर निर्वाह करने पर घमंड करते हैं। आलसीपन और घूमना-फिरना आज की समस्या नहीं है बल्कि यह तो प्रथम सदी की थिस्सलुनीके की कलीसिया की भी समस्या थी। दूसरी थिस्सलुनीके के आवारा घूमने वाले लोगों को अनुचित चाल चलने वाले या अनुशासनहीन लोग कहा गया (3:6, 7, 11)। ये आलसी लोग थे और एक बुरा उदाहरण प्रस्तुत कर रहे थे। परमेश्वर के वचन की रोशनी में इस प्रकार के आलसीपन को पाप कहा जाता है।

इससे भी बढ़कर ये और भी समस्या उत्पन्न कर रहे थे। न केवल ये लोग आलसी थे और कलीसिया के अच्छे उदाहरण को प्रभावित कर रहे थे बल्कि वे तो दूसरों के कार्यों में भी हस्तक्षेप कर रहे थे। नए मसीहियों को तो यह सिखाया गया था कि वे अपनी बातों पर ध्यान दें और अपना कार्य करें (1 थिस्सलुनीकियों 4:11), परंतु ये आलसी तो चुगली करने में भी व्यस्त थे। वास्तव में वे स्वयं तो कार्य नहीं कर रहे थे बल्कि "चारों तरफ घूमते फिर रहे थे।" उन्होंने दूसरों के व्यवसाय को अपना व्यवसाय बना लिया था; वे दूसरों के अच्छे कार्यों में भी हस्तक्षेप कर रहे थे।

उसी तरह, आज जो लोग कार्य नहीं करते हैं वे चुगली करते हुए इधर-उधर घूमते फिरते हैं और दूसरों के कार्यों में हस्तक्षेप करते हैं। यह तो आलसीपन के पाप के समान है।

हमारे कार्य को परमेश्वर का कार्य होना चाहिए! जैसे कि पौलुस ने उन दासों को जो मसीह बन गए थे निर्देशित किया, "और जो कुछ तुम करते हो,

तन मन से करो, यह समझ कर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो" (कुलुस्सियों 3:23)।

जो कार्य नहीं करते हैं उनको अलग कर देना चाहिए (3:13–15)। यदि कलीसिया के सदस्य कार्य करने से इनकार करते हैं तो कलीसिया को क्या करना चाहिए? बाइबल इस संबंध में स्पष्ट उत्तर देती है : "कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए" (3:10ब)। हमें आलसी लोगों को नहीं खिलाना चाहिए; बल्कि उनसे "अलग रहना" चाहिए और उनकी "संगति नहीं करनी" चाहिए (3:6, 14)! हमें उनके साथ मित्रता नहीं करनी है! हमें उनको अपनी संगति में सम्मिलित नहीं करना है या उन्हें अपने भोजन में साथ नहीं बैठाना है! इस विषय पर यह परमेश्वर का संदेश है।

जो आलसी हैं उनके साथ इस प्रकार का व्यवहार बड़ा कठोर जान पड़ता है, परंतु इस प्रकार के व्यवहार का उद्देश्य उनको भूखा मारना नहीं है। यह उनको पाठ सिखाने के लिए है कि वे परमेश्वर और उसके लोगों के समान व्यवहार नहीं कर रहे हैं बल्कि उन्होंने अपने आपको परमेश्वर के लोगों के जीने के तरीके से अलग कर लिया है। जब वे इस प्रकार का व्यवहार करते हैं तो उनके साथ विश्वासयोग्य भाई या बहिन के समान व्यवहार करना स्वीकार्य नहीं है। उनको यह समझना आवश्यक है कि उनका आलसीपन कितना शर्मनाक है। सिखाने, चेतावनी देने और अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करने के द्वारा संगी मसीही इन अनुचित चाल चलने वाले मसीहियों को सुधरने में सहायता कर सकते हैं और उनको फिर से कार्य करने के लिए भेज सकते हैं।

परमेश्वर के परिवार में होने का तात्पर्य उसके अनुशासन में रहना है। यदि आलसी भाई लोग इस प्रकार के अनुशासन को स्वीकार नहीं करते हैं तो वे परमेश्वर की भलाई से वंचित रह जाएंगे। हमारे कार्यों में व्यवहारिक रूप से यह निर्णय दिखाई देना चाहिए; तब जो अनुचित चाल चलते हैं वे कार्य के महत्व को जानेंगे और परमेश्वर के अनुशासन को त्यागने का खतरा समझेंगे। इसके बाद चाहे तो वे पश्चाताप करें, दूसरों के कार्यों में हाथ डालना बंद करें और कार्य करना प्रारंभ करें, यह उन तक सीमित है; लेकिन निःसंदेह वे अपने व्यवहार के खतरे से अवगत हो जाएंगे।

जो कार्य नहीं करेंगे उन्हें अपना दृष्टिकोण और जीवन बदलने के लिए हमारी आवश्यकता पड़ेगी। कार्य के प्रति परमेश्वर की इच्छा को उन्हें सिखाने के द्वारा, हमारे अपने कार्य का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करने के द्वारा और उनके अभक्तिपूर्ण व्यवहार के परिणाम के प्रति चेतावनी देकर, ऐसा करने में हम उनकी सहायता कर सकते हैं।

उपसंहार। मसीहियों के लिए, सभी कार्य परमेश्वर के कार्य हैं। जो कुछ हम घर पर या कार्य स्थल पर करते हैं, परमेश्वर ही उसका स्वामी, नियोक्ता, और अधिकारी है। क्योंकि यह परमेश्वर का कार्य है जो परमेश्वर के लिए किया

जाता है, इसलिए यह विशेष, पवित्र और पावन है। यह बहुत महत्वपूर्ण है। अच्छा कार्य करना परिपक्व मसीही का चिह्न है।

जब हम कार्य स्थल पर अच्छा कार्य करते हैं तो हम केवल परमेश्वर की आज्ञा का पालन ही नहीं कर रहे हैं बल्कि हम एक अच्छा उदाहरण भी प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसमें हम आवश्यकताओं की भी पूर्ति करते हैं और परमेश्वर के लिए हम फलवंत होते हैं। हमारे अच्छे कार्यों के द्वारा हमारे स्वामी की बड़ाई होती है। उसके मार्गों का अनुसरण करते हुए, आओ हम प्रतिदिन अपने स्वामी की सेवा और सम्मान करें! TP

समाप्ति नोट्स

[1]सी. एफ. हॉग और डब्ल्यू. ई. वाईन, *द एपिसल्स ऑफ पौल द अपोस्ल टू द थिस्सलोनियन्स* (श्रेवेपोर्ट, लास : लैंबर्ट पबलिशिंग को., 1977), 282. [2]हेनरी एल्फोर्ड, *द ग्रीक टेस्टामेंट*, रिवाइज्ड एवेरेट एफ. हैरिसन (शिकागो : मूडी प्रैस, 1958), 3:295. [3]आई. हॉवर्ड मार्शल, *1 एंड 2 थिस्सलोनियन्स*, द न्यू सेन्चुरी बाइबल कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन : वम. बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग को., 1983), 215. [4]ए. टी. रॉबर्टसन, *दि इपिसल्स ऑफ़ पॉल*, वॉल्यूम 4, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टेस्टमेंट* (नैशविले : ब्रॉडमन प्रेस, 1931), 57. [5]जॉन स्टॉट, *द गॉस्पेल एण्ड दि एण्ड ऑफ़ टाइम* (डाउनर्स ग्रोव, इलि. : इंटरवर्सिटी प्रेस, 1991), 191. [6]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टमैंट एण्ड अदर अर्ली क्रिस्टियन लिटरेचर,* 3र्ड एड., रिवाइज्ड एंड एडिटेड फ्रेडरिक विलियम डेनकर (शिकागो : यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 2000), 148. [7]रॉबर्टसन, 58. [8]डेविड जे. विलियम्स, *1 एण्ड 2 थिस्सलोनियन्स*, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेन्टरी : न्यू टेस्टमैंट सीरीज़, वॉल्यूम 12 (पीबॉडी, मैसाचुसेट्स : हेंड्रिकसन पब्लिशर्स, 1992), 135–36. [9]रॉबर्टसन, 58. [10]लियान मॉरिस, *फर्स्ट एण्ड सेकण्ड एपिसल टू द थिस्सलोनियन्स*, द न्यू इंटरनेशनल बाइबल कमेन्टरी ऑन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन. : विलियम बी. एर्डमंस पब्लिशिंग कं, 1959), 253. "रोटी" और "भोजन" के लिए इब्रानी शब्द एक ही है : לֶחֶם (*लेकेम*)। देखें फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, एण्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हिब्रू एण्ड इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ दि ओल्ड टेस्टामेंट* (ऑक्सफोर्ड : क्लेयरडन प्रेस, 1972), 536–37.

[11]हॉग और वाइन, 287. [12]इबिड, 288. [13]जे डब्ल्यू. मैकगार्वे एण्ड फिलिप वाई. पेंडलटन, *थिस्सलोनियन्स, कोरिन्थियन्स, गलेशियन्स एण्ड रोमन्स*, द स्टैण्डर्ड बाइबल कमेन्टरी (सिनसिनाटी, ओहाईयो : स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग फाउंडेशन, 1916), 46. [14]मार्शल , 225. [15]हॉग और वाइन, 290. [16]रॉबर्टसन, 60. [17]देखें मॉरिस, 258. [18]मार्शल, 228. [19]रेमण्ड सी. केल्सी, *द लेटर्स ऑफ़ पॉल टू द थिस्स्लोनियन्स*, द लिविंग वर्ड कमेन्टरी, वॉल्यूम 13 (ऑस्टिन, टेक्सस : आर. बी. स्वीट कं., 1968), 180. [20]बाउर, 148.

[21]रॉबर्टसन, 58.